हिन्दी मासिक

ओ३म्

एक प्रति मूल्य:रू.२५/-

जनज्ञान

दिसंबर २०१७

वर्ष: ५३ अंक ०८

मार्गशीष-पौष २०७४

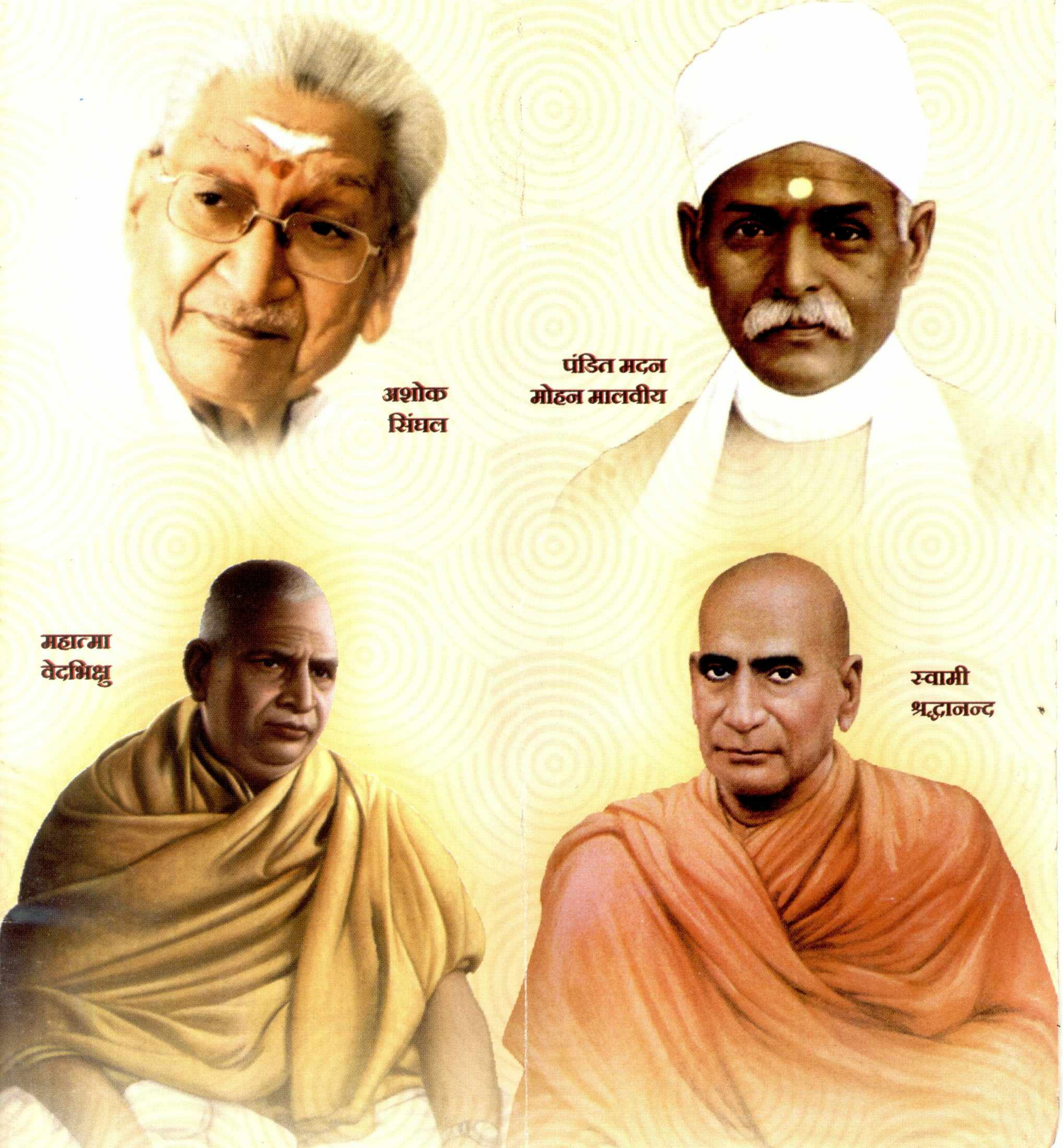

अशोक सिंघल

पंडित मदन मोहन मालवीय

महात्मा वेदभिक्षु

स्वामी श्रद्धानन्द

UNINTERRUPTED PURE POWER FOR ALL APPLICATIONS
MICROTEK
UPS • STABILIZER • SOLAR
Subodh Gupta
Vice Chairman
COMPLETE RANGE OF UPS
625VA UPS
TUFF POWER PRO+
1 TO 30KVA
ONLINE UPS
DIGITAL & SINEWAVE
UPSEB / UPSE²+ / UPS24x7
UPS EB: More than 6 TIMES BETTER
700VA to 2000VA
UPS E²+: SUPER ENERGY EFFICIENT
715VA to 1625VA
UPS 24x7: HYBRID Technology
725VA to 1650VA
SOLAR PRODUCTS
JUMBO
INTELLI PURE
SINEWAVE UPS
5.5KVA
UPTO 10KVA
ENERGY EFFICIENT AUTOMATIC VOLTAGE STABILIZERS
OVER 11 CRORE SMILING USERS.
UNMATCHED QUALITY, SERVICE & TECHNOLOGY
MICROTEK INTERNATIONAL PVT. LTD.
www.microtekdirect.com
H-57, UDYOG NAGAR, ROHTAK ROAD, NEW DELHI-110041. Ph: 011-42733377 Email: ho@microtekdirect.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद — ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

संरक्षक मण्डलः

सुबोध गुप्ता (माइक्रोटेक)
ठा. विक्रम सिंह
रिखब चन्द जैन (टी.टी.)

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली

हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु
प्रधान सम्पादक : पण्डिता राकेशरानी
सम्पादक : दिव्या आर्य
मोबाइल : 8459349349, 9810257254
Email:dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
केशवनगर बस स्टैण्ड
पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३६

एक प्रति- 25 रु०, **पांच वर्ष**-1200 रु०,
आजीवन-5100/- **संरक्षक सदस्य**-11000/-
विदेश में (हवाई जहाज से)---
वार्षिक शुल्क-5000, **आजीवन**-50000रु

दिसम्बर 2017 वर्ष 55 अंक 8

आवरण पृष्ठ : अरविन्द मोहन मित्तल

सम्पादकीय

जब आता दिसम्बर मास! वे हिन्दुत्व पुरोधा आते याद!!

जब दिसम्बर मास आता है तो उन कई वंदनीय महापुरुषों की स्मृति दिलाता है, जिन्होंने आर्य गौरव के पुनरुद्धार और स्वदेश की पराधीनता के पाश से मुक्ति तथा हिन्दू राष्ट्र के तेजस्वी स्वरूप के उदय की कामना कर असिधारा व्रत का पालन करते हुए संघर्ष पथ का वरण किया था। उन्होंने अपने राष्ट्रभक्त युवकों को नेतृत्व प्रदान कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी।

दिसम्बर मास ऐसे जिन प्रेरणापुरुषों का स्मरण दिलाता है उनमें अग्रगण्य थे- **देवता स्वरूप भाई परमानन्द, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द तथा पण्डित मदन मोहन मालवीय।**.....भाई जी एवं स्वामी श्रद्धानन्द जहां आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द को अपना प्रेरणा पुरुष मान कर उनके द्वारा प्रदर्शित पथ के पथिक बने थे **वहीं**....पण्डित मदन मोहन मालवीय भी **स्वामी दयानन्द द्वारा नारी शिक्षा तथा तथाकथित अस्पृश्यों को मंत्रों के पठन पाठन का अधिकार देने के अभियान से सहमत** एवं संस्कृत तथा हिन्दी प्रचार-प्रसार में पूर्ण शक्ति सहित सक्रिय रहे थे। **इन तीनों ही महापुरुषों ने.....** महर्षि दयानन्द द्वारा स्वदेश की स्वतन्त्रता हेतु संघर्ष के आह्वान् को अपने व्यवहार में उतारा था।

दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान मासिक के संस्थापक पंडित भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः) ने भी....देवतास्वरूप भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और महामना मालवीय के प्रेरक जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी बाल्यावस्था में ही स्वातन्त्र्य अभियान में योगदान कर ब्रिटिश सत्ता के क्रीतदासों के उत्पीड़न को तो सहन किया ही था, स्वतन्त्र भारत में भी वे हिन्दू राष्ट्र के तेजस्वी स्वरूप के उदय की कामना कर संघर्ष पथ के पथिक रहे।....दिसम्बर मास में ही

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

उन्होंने अपनी नश्वर काया का परित्याग कर अपनी इहलोक यात्रा पूर्ण की थी।

स्वदेश में विद्यमान स्थिति और परिस्थिति पर दृष्टिपात किया जाता है तो यह तथ्य उभर कर समक्ष आता है कि **स्वदेश की स्वतन्त्रता के बाद भी राष्ट्र में एकात्मता और समरसता का वह भाव सृजित नहीं हो पाया, जो उसे अजेय शक्ति प्रदान करने में समर्थ है।** स्वदेश की स्वतन्त्रता के उपरान्त सत्ता के आकांक्षी अधिसंख्य राजनीति निष्णात जन **सत्तासीन रहने के लिए उसी कुपथ का अनुगमन करते रहे, जिसके अनुगमन से राष्ट्र को विखंडन और देश के विभाजन की त्रासदी झेलनी पड़ी थी।** देश के राजनीतिक मंच पर जो बदलाव आया है, स्वयं को विशुद्ध राष्ट्रवाद के प्रति समर्पित मानने वाले सत्ता में अब आए सुधिजन के समक्ष भी उनके चुनौतियां उपस्थित हैं।.....

इस संक्रमण काल में **देवता स्वरूप भाई परमानन्द, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द** और **महात्मना पंडित मदन मोहन मालवीय** सरीखे युग पुरुषों का प्रेरक जीवन, सिद्धान्तनिष्ठा तथा जीवन वृत्त सत्तासीन जन का पथ प्रदर्शन कर सकता है।....

हिन्दुत्व के पुरोधा कर्मयोगी महामानव अशोक सिंघल का निधन भी लम्बे संघर्षमय जीवन के साथ इसी माह गत वर्ष हुआ। **श्री सिंघल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे,** उन्होंने विश्व हिन्दु परिषद के माध्यम से हिन्दु समाज में चैतन्य निर्माण करने का जो कार्य किया है उसके फलस्वरुप वे हिन्दू जागरण के इतिहास में सदैव स्मरण किए जाएंगे।.....

महात्मा वेदभिक्षु की ध्येयनिष्ठा कर्म कौशल और सरल. किंतु संघर्षपूर्ण जीवन भी देश की राष्ट्रनिष्ठ युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है।....

यह माह स्मरण दिलाता है कि स्वामी श्रद्धानन्द तथा देवतास्वरूप भाई परमानन्द और महामना पंडित मदन मोहन मालवीय से कर्मयोगियों और उनके द्वारा प्रदर्शित पथ का अनुगमन कर जन भाषा में परम पिता परमात्मा की कल्याणी चारों वेदों के हिन्दी भाष्य के प्रथम संस्करण को मात्र पैंतीस रुपए में उपलब्ध कराने का इतिहास महात्मा वेदभिक्षु ने रचा था। उनकी पुण्यतिथि भी इसी माह में आती है।

देवतास्वरूप भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द तथा महामना मालवीय ने स्वदेश और स्वधर्म के लिए अपने जीवन के हर क्षण और रक्त का कण-कण समर्पित कर चाणक्य, चन्द्रगुप्त, प्रणवीर प्रताप, और वीर शिवाजी की प्रखर राष्ट्र भक्ति, त्याग, तपस्या और बलिदानी परम्परा का पालन किया था।

भाई परमानन्द ने......स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर के समान अंडमान के क्रूर कारागार में यम यातनाएं झेलते हुए स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की आराधना की थी। **भाई जी, राष्ट्रभक्त लाला हरदयाल और गांधी जी, जिन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने महात्मा कहकर सर्वप्रथम सम्बोधित किया था, के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बने थे।.....**

अमर हुतात्मा **स्वामी श्रद्धानन्द ने देव दयानन्द द्वारा प्रेरित शुद्धि अभियान में योगदान प्रदान कर अपना जीवन प्रसून हिन्दुत्व को गतिमान करने के यज्ञ में समर्पित किया था।....** महामना पंडित **मदन मोहन मालवीय ने** स्वसंस्कृति के प्रति युवा पीढ़ी को अनुरक्त बनाने के लिए **हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कर शिक्षा, मन्त्र दीक्षा तथा राष्ट्र को ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध करने के अभियान में ऐतिहासिक योगदान दिया था।...... इन महापुरुषों के स्वसंस्कृति, स्वधर्म और स्वराष्ट्र के प्रति सर्वस्व समर्पण पथ के राही 'महात्मा वेदभिक्षुः' बने थे।**

देव दयानन्द का दर्शन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बने तथा **वेदों की ओर लौटने का उस महामानव का आह्वान् हमारी जीवन विद्या बने!!...**

आज जब आर्य चिन्तन-दर्शन पर चतुर्दिक प्रहार हो रहे हैं—काल प्रवाह का है यह आह्वान् कि **सबल सजग हिन्दू राष्ट्र गठन हो हमारा जीवन संकल्प!** हमें रहे इस तथ्य का भी ध्यान कि.... ऐसे अनेक व्यक्ति होते हैं, जो महान और लाभकारी कार्य की सफलता के अवसर पर उसके साथ हो लेते हैं, **कुछ उस समय संघर्ष में सम्मिलित हो जाते हैं, जब सफलता के लक्षण दिखाई देने लगते हैं....** किन्तु **करोड़ों में कोई एक ही व्यक्ति होता है, जो.... सब स्वाहा होने अथवा विश्वासघात झेल कर भी अपने उद्देश्य से विचलित हुए बिना संघर्ष जारी रखता है।**

ऐसे व्यक्तित्व ही राष्ट्र, जाति, धर्म के प्रहरी होते हैं। और उनके त्याग, ध्येय-निष्ठा और बलिदान से ही आगामी पीढ़ी प्रेरणा पाती है। उस समय वह भले ही असफल रहें किन्तु किसी जाति के जीवन और विजय को सुनिश्चित कर जाते हैं। उपरोक्त वरेण्य राष्ट्रभक्त पथ प्रदर्शक भी उसी अष्ट धातु के बने थे।......**परमात्मा हमें उनके जीवन से प्रेरणा प्रदान करें!** जिससे राष्ट्रधर्म के कर्तव्य का निर्वाह करने में हों समर्थ हम सभी!.....

●●●

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

सम्पादकीय–जब आता दिसम्बर मास!
वे हिन्दुत्व पुरोधा आते याद!!
उपस्थित है यह प्रेरणाप्रद माह ३
सामायिक-विचारः रेरा का डंडा तो चला लेकिन... –*अश्विनी कुमार* ६
महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणीः तब क्या होगा? ७
हृदय मंदिर के उद्‌गार –*दिव्या आर्य* ८
मां पण्डिता राकेश रानी के अमृत कणः
शहीदों के चरणों में! १०
आपके पत्र १३
उनकी लगन उग्र थी –*विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड* १४
अमर महात्मा वेदभिक्षुः के प्रति –*बृजकिशोर अश्क* १४
धन्य-धन्य है आर्य समाज! –*महात्मा वेदभिक्षुः* १५
वैदिक-दर्शनः उपनिषदों में शरीरसंरचना विज्ञान –*डॉ. अनुराग शुक्ल* १६
अन्धविश्वास के जीवन की समाप्ति–*स्वामी श्रद्धानन्द* २०
स्वामी श्रद्धानन्द २२
धार्मिक सद्‌भावना के आलोकपुंज स्वामी श्रद्धानन्द –*अखिलेश आर्येन्दु* २३
महान् क्रान्तिकारी-राजेन्द्र लाहिड़ी –*सुधा अग्रवाल* २४
पण्डित मदनमोहन मालवीय –*रविचन्द्र गुप्ता* २५
परिचय –*अटल बिहारी वाजपेयी* २६
कालजयी जनप्रिय राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी –*सूर्यप्रकाश सेमवाल* २७
पेनांग द्वीप का एक संस्मरण –*भाई परमानन्द* २९
मुंशी प्रेमचन्द ने भी लताड़ा था मुस्लिम कट्टरवाद को –*शिवकुमार गोयल* ३१
भारत की राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति –*गिरीश त्रिवेदी* ३२
विषम परिस्थितियों में एकमात्र विकल्प –*मा.स. गोलवलकर* ३४
सौ वर्ष तक कैसे पाएं-आरोग्य –*डॉ. हर्षवर्धन* ३६
एप्पल कम्पनी के संस्थापकः स्टीव जॉब्स ३९
बाल-जगतः दो महान त्यागी ४०
तांगेवाला कैसे बना मसालों... –*म. धर्मपाल गुलाटी* ४१
स्वास्थ्य विचारः वृद्धावस्था और..... –*डॉ. फणिभूषण दास* ४२
समाचार-दर्शन ४३

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों को उपहार व आह्वान...

प्रभु की अमरवाणी चारों वेद, हिन्दी भाष्य सहित 1970 के दशक में महात्मा वेदभिक्षुः (पं. भारतेन्द्र नाथ) जी ने मात्र रु 35/- में उपलब्ध कराकर, (जबकि लागत मूल्य था 101/-) सम्पूर्ण विश्व को किया था अचम्भित!!

स्वामी दयानन्द संस्थान उनके दिखाए ऋषि पथ का, "लौटों वेदों की ओर" का अनुगमन कर....लागत मूल्य ~~4000~~/- के स्थान पर चारों वेद हिन्दी भाष्य सहित "मात्र मूल्य 2500/- में" पिताजी-महात्मा वेदभिक्षु जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित "राष्ट्र रक्षा संकल्प सम्मेलन के अवसर पर.....उनके द्वारा संस्थापित आराध्यस्थली वेद मन्दिर में 18 मार्च 2018 को उपहारस्वरूप उपलब्ध कराके इतिहास रचने जा रहा है....

मात्र एक दिन के लिए वेद भाष्य इस मूल्य पर उपलब्ध कराया जाएगा....

संस्थान सम्प्रति, विषम आर्थिक परिस्थितियों से जूझ रहा है, गत 3 वर्षों से संस्थान की अध्यक्ष मां पण्डिता राकेश रानी जी भी वेंटीलेटर तथा अन्य श्वास उपकरणों पर हैं....लाखों का व्यय...साधन कुछ नहीं और समय भी नहीं.....

किन्तु...संस्थान के, मानवता के उद्देश्य और ऋषि दयानन्द के सन्देश– "वेद का पढ़ना- पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" को शिरोधार्य कर...विपरीत परिस्थितियों में भी यह घोषणा करने का साहस जुटा रही हूं! आपका मुक्त हस्त से सहयोग मिलेगा...इस विश्वास पर!!.

परिस्थितियां हमारे अनुकूल होंगी, ऐसा विश्वास कर हम हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठ सकते...परिस्थितियों से जूझने का साहस संजोना ही होगा न!! क्योंकि...जीवन क्षणभंगुर है और कार्य अनेक!....

तो आइए, चलें मिलकर गुञ्जाएं वेदवाणी. 18 मार्च 2018, वेद मन्दिर के प्रांगण में....प्रातः 10.30 से...

–*दिव्या आर्य*

समायिक-विचार

रेरा का डंडा तो चला लेकिन...

–अश्विनी कुमार

करीब डेढ़ लाख लोग नोएडा, ग्रेटर नोएडा और नोएडा एक्सटेंशन में निवेश के बाद वर्षों से फ्लैटों की पजेशन का इंतजार कर रहे हैं। हजारों लोग अदालतों में बिल्डरों की मनमानी के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं। **उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी लोगों को फ्लैटों का कब्जा दिलवाने का आश्वासन दिया है।**

यह सही है कि न्यायपालिका ने निवेशकों से धोखाधड़ी करने वाले बिल्डरों पर शिकंजा कसा है। कुछ मामलों में बिल्डरों को निवेशकों का धन लौटने या फिर फ्लैट देने के निर्देश दिए हैं। कुछ कम्पनियों के निवेशकों से उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति का ब्यौरा मांगा गया और उनके विदेश जाने पर रोक लगा दी गई है लेकिन **अदालतों की प्रक्रिया इतनी धीमी है कि निवेशकों को न्याय के लिए कई वर्ष तक इंतजार करना पड़ेगा।**

देश में रियल स्टेट अथॉरिटी (**रेरा**) पिछले वर्ष से लागू है। इसके तहत **जारी गाइड लाइन पर खरा उतरने के बाद ही कोई भी बिल्डर नया प्रोजैक्ट लांच कर सकता है। अभी तक ऐसा कोई सिस्टम नहीं था** जिसके तहत बिल्डरों की मनमानी पर रोक लगाई जा सके। अब राज्यों में भी रेरा कानून को प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है। **बिना रेरा पंजीयन के कोई भी प्रोजैक्ट की बिक्री नहीं शुरू कर पाएगा। प्रोजैक्ट पूरा होने में देरी होने पर पेनल्टी भरनी होगी** और खरीदार से जो पैसा मिलेगा उसका 70 फीसदी निर्माण कार्य पर खर्च किया जाएगा।.....

कानून में खरीदारों के हितों की सुरक्षा के लिए कई प्रावधान किए हैं। **रेरा नियमों के तहत बिल्डर को 5 साल तक प्रोजैक्ट की मरम्मत का जिम्मा उठाने का प्रावधान किया गया। इसके अलावा बिल्डर लेट पेमेंट पर मनमाना जुर्माना भी नहीं वसूल पाएंगे।**

नियमों और कानूनों का फायदा तभी है जब उन्हें सख्ती से लागू किया जाए। **बिल्डरों ने एक प्रोजैक्ट के लिए निवेशकों से धन एकत्र किया और दूसरे प्रोजैक्ट में लगा दिया। दूसरे प्रोजैक्ट का पैसा तीसरे प्रोजैक्ट में लगा दिया। केवल ढांचे खड़े कर दिए,** किसी को दिया कुछ नहीं।.....रेरा कानून रियल एस्टेट सैक्टर परियोजनाओं की डिलीवरी में देरी अपूर्ण परियोजनाएं, निर्माण की बढ़ती लागत, विनियामक मुद्दों जैसी बहुत सारी समस्याओं के हल के लिए ही लाया गया था।

यह कानून आवासीय और वाणिज्यक दोनों ही परियोजनाओं के नियंत्रण के लिए ही बना है। रियल स्टेट नियामक अधिनियम से यह अपेक्षित है कि वह रियल्टी क्षेत्र में पारदर्शिता लाकर उत्तरदायित्व का निर्वहन करे।

इस कानून में खास बात यह है कि खरीदारों और डेवेलपर्स किसी की भी शिकायतों का निराकरण 60 दिन के भीतर किया जाएगा। रेरा ने अब एक खरीदार के हक में पहला बड़ा फैसला सुनाया है। रेरा ने एक बिल्डर को खरीदार का पैसा वापस करने का आदेश दिया है। यह आदेश दिल्ली की एक महिला की शिकायत पर प्रोमोटर बुललैंड बिल्टेक के खिलाफ सुनाया है।

रेरा ने बिल्डर को 45 दिन के भीतर शिकायतकर्ता के फ्लैट की कुल लागत के साथ प्रतिमाह 25 हजार रुपए जुर्माने ने रूप में देने का आदेश भी दिया है। महिला पहले ही दो फ्लैटों के लिए 50 लाख का भुगतान कर चुकी थी। **एग्रीमेंट के अनुसार फ्लैटों का कब्जा देने की तिथि 31 अक्टूबर 2015 थी। शिकायत के बाद जांच-पड़ताल में पाया गया कि परियोजना का निर्माण कार्य बन्द है।** इसमें पहले ही लगभग 2 वर्ष का विलम्ब हो चुका है। शिकायतकर्ता महिला ने भी अदालत में लड़ाई लड़ी लेकिन उसे इन्साफ नहीं मिला तो उसने 4 महीने पहले ही रेरा में इसकी शिकायत की थी। **अगर बिल्डर ने खरीदार का धन नहीं लौटाया तो उसकी प्रोपर्टी या बैंक अकाउंट से पैसे की वसूली की जा सकती है।**

रेरा का फैसला सराहनीय है लेकिन खरीदार को इन्साफ तब मिलेगा जब बिल्डर उसे पैसा वापस करेगा। **कई खरीदार इस बात की शिकायत कर रहे हैं कि रेरा में शिकायत करने के बाद भी उसकी सुनवाई नहीं हो रही।** सुनवाई की तारीख हर महीने आगे बढ़ा दी जाती है जिससे उन्हें परेशानी हो रही है। रेरा में खरीदारों की शिकायतों का अम्बार लगा हुआ है। अधिक मामले होने से दबाव बन गया है। रेरा प्राधिकरण को चाहिए कि कई शहरों में अपनी शाखाएं स्थापित करे ताकि लोगों को हर सुनवाई के लिए लखनऊ न जाना पड़े।

कई राज्यों में बिल्डरों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। **पंजीयन न कराने वाले बिल्डरों के प्रोजैक्ट रद्द किए जा रहे हैं।** यह सही है कि खरीदार पहले से बहुत जागरूक है, वह अपने हकों की लड़ाई लड़ना भी जानता है लेकिन सिस्टम की खामियों की वजह से उसे इन्साफ पाने के लिए बहुत जद्दोजहद करनी पड़ती है। उसे इन्साफ आसानी से नहीं मिलता। रेरा का डंडा चले तो फिर ऐसा चले कि खरीदार को फ्लैट नहीं तो उसका धन तो उसे मिल ही जाए।......2–(**पंजाब केसरी से साभार**) ●●●

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर-वाणी

तब क्या होगा?

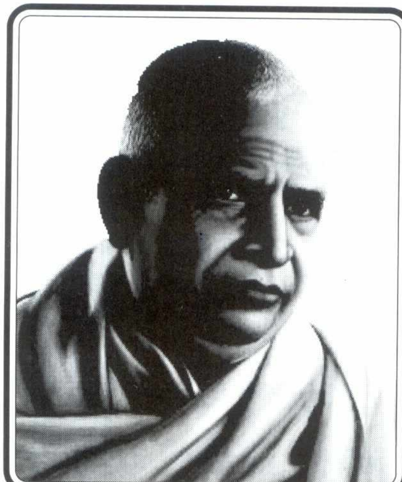

मां का शीश कट आएगा? मस्तिष्क विकृत हो जाएगा? अपने देश में हम विदेशी होंगे.... **तब क्या होगा?**

'भारत' हमारा देश नहीं, माँ है। भारत माता की जय का स्वर गुंजाकर हमने स्वतन्त्रता का युद्ध लड़ा था। और जब आजादी मिलने लगी। तब स्व. पं. नेहरू ने कहा था-

हमने सर कटा कर सिर दर्द की दवा की है,

सिर भी कट गया..... पर दर्द की दवा नहीं हुई। 29 वर्ष बीत गए। कल की सी बात लगती है, जब सर्वत्र तिरंगा झंडा अपने प्राणों से जो बढ़कर था, हमने फहराया था। हमने स्वयं 47 ग्रामों में से घूम-घूमकर रात के 10 बजे तक उत्सब मनाया था, झंडा फहराया था।

1942 में इस तिरंगे को लहराने के लिए हम सभी ने कितनी यातनाएं-कष्ट सहे थे। आज कौन उस स्थिति का अनुमान कर सकता है।

15 अगस्त 1947 को पं. नेहरू के हाथों लाल किले पर तिरंगे का आरोहण देखकर कितना हर्ष उमड़ा था।

क्या क्या कल्पनाएं की थीं। पिछले 29 वर्षों में देश की प्रगति और गौरव की कहानी किसी से भी छिपी हुयी नहीं है।

किन्तु इस सबके बीच आज विदेशी विचारधारा का, विदेशी तत्वों का सिर उठाना सभी देशभक्तों के लिए चिन्ता का विषय है। जिनकी भक्ति भारत मां के प्रति नहीं है वे बढ़ रहे हैं और भारत मां के बेटे अपने अपने स्वार्थ में उलझे हैं।

हमें चिन्ता है देश के भविष्य की, क्या होगा जब खाओ, पियो और मौज उड़ाओ का दर्शन सफल होगा। क्या होगा जब विदेशी तत्व सबल होंगे और राम-कृष्ण शिवा-प्रताप के अनुयायी दुर्बल पड़ जाएंगे?

शराब-विलासिता-फैशन और राग-रंग का प्रवाह बढ़ रहा है, शिक्षा की वृद्धि से व्यक्ति क्लर्क तो बन रहा है पर काम करने की भावना खो गयी है।

देश की एकता, सुख और सुनहरे भविष्य के लिए तप-त्याग और बलिदान के अतिरिक्त और कोई मांग नहीं है। देश की 50 करोड़ जनता एक स्वर से भारत मां की जय बोले और कार्य का, रचनात्मक काम का महत्व समझे, तभी यह लहराता तिरंगा धरती को सत्य शान्ति मानवता का सन्देश दे सकता है।

काश कि, हम-वे-सब बदल सकते और भारत के चरणों में संसार झुक जाता।

-("जनज्ञान साप्ताहिक" 22 अगस्त 1976 से.)

सत्य झूठ में

यह कैसी धरती है बाबा, इस का कैसा खेल है।
झूठ सत्य पर राज्य कर रहा, अमृत विष का मेल है।

★★★

प्राणों में पीड़ा रोती देखी, पाखण्डों को बढ़ते देखा,
धर्म लक्ष्य के लिए जिए जो, उनको जग में सड़ते देखा।

★★★

देख रहे हैं खड़े खेल हम, जीवन के बलिदान का,
पापों के हँसते वैभव को, पता नहीं वरदान का।

★★★

आज राष्ट्र की पीड़ा को भी, भुना रहे हैं व्यापारी।
धर्मध्वजी नेतागण सारे, बने हुए अज्ञान पुजारी।

★★★

किसे बताऊँ सत्य झूठ में, सत्य जानकर चलना सीखो।
पाप-पुण्य को एक तराजु में, मत तोलो जीना सीखो।

★★★

कांप रही है ध्वजा हमारी, केवल झूठ प्रचार से।
विजय वरण है इष्ट जिन्हें भी, चलना सीखें प्यार से,
सत्य सुधा अभिसार से ।

-मां पण्डिता राकेश रानी

दयानन्द संस्थान के गौरवमयी इतिहास की धुरी...
श्रद्धेय-नाना जी पण्डित रामचरण शर्मा एवं पिताजी महात्मा वेदभिक्षु की स्मृति में...

हृदय मन्दिर के उद्गार

–दिव्या आर्य

**दयानन्द संस्थान के निर्माण के बने जो सूत्रधार, जो धुरी थे नानाजी जी पं. रामचरण शर्मा,
आर्यसमाज गाजियाबाद के प्रधान और दामाद भारतेन्द्र नाथ की अनुपम प्रतिभा के भविष्यदृष्टा
अनूठी 23शर्तें अखबार में पढ़ 'पुत्री राकेश' को क्रान्तिकारी 'भारत' संग था गठबंधन में बांधा,
उच्च कोटि के दिए संस्कार अपनी 'मुन्नी' को जिसने-विश्वभर में वैदिक नाद गुंजाया.
ऐसे पूर्वजों के दिखाए ऋषि पथ पर चलने का साहस दो प्रभु अपरम्पार यहीं है हृदय मन्दिर के उद्गार**

दिसम्बर माह उपस्थित है, और अतीत की बहुत सी झंझोड़ती स्मृतियां सम्मुख उपस्थित कर रहा है.....

मेरे लेखों में बहुधा **दादी जी-विद्यावती शारदा** (भारत की प्रथम महिला मजिस्ट्रेट एवं कांग्रेस की अध्यक्ष रहीं) तथा **दादा जी पं.गयाप्रसाद शुक्ल** (प्रसिद्ध क्रान्तिकारी तथा काकोरी काण्ड के नायक तथा चन्द्रशेखर आजाद के मुख्य साथियों में एक, इन दोनों पर निर्माता धीरज कुमार द्वारा दूरदर्शन पर प्रसारित **धारावाहिक 'कहां गए वो लोग'** में 2 एपिसोड की श्रृंखला भी उपस्थित की गई)....का जिक्र होता है....

मां पण्डिता राकेशरानी जी एवं पिता भारतेन्द्रनाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु जी) का परिचय तो मुझसे जनज्ञान के पाठकगण ही बहुधा करवाते हैं परन्तु आज...मैं स्मरण कर रही हूं कि इस गौरवशाली पारिवारिक पृष्ठभूमि के कर्मों की धरोहर को संजोने वाली कड़ी क्या है, **वो धुरी कहां है...जिसने नींव का पत्थर बन पण्डित भारतेन्द्र के 'महात्मा वेदभिक्षु' बन वेदों के प्रकाशन की, ऋषि दयानन्द के कार्यों को गतिमान रखने की तूफानी चेतना प्रदान की....**

पिताजी के लेखों में और हमारे समक्ष भी जो चेहरा उपस्थित होता है–वो निश्चित ही मां पण्डिता राकेशरानी का है लेकिन....**वो शिल्पी कौन है–जिसने. पण्डिता राकेशरानी जैसी अदम्य साहस की मूरत, धैर्य-त्याग और कर्मठता की अनुपम मिसाल गढ़ी!!.**

वो शिल्पकार थे–अद्भुत प्रतिभावान मां पण्डिता राकेशरानी के पिता–**हमारे आदरणीय नाना जी पं. रामचरण शर्मा, जिनकी इसी माह पुण्यतिथि है 3 दिसम्बर...** मृत्यु भी मानों प्रभु ने ऐसी वरण की उनकी. कि किसी पर लेशमात्र भी बोझ नहीं बने...रेल दुर्घटना में कटे....अंग-प्रत्यंग छिन्न-भिन्न हुआ और अन्तिम संस्कार भी विद्युत शवदाह गृह में परिजनों के पहुंचने से पूर्व ही हो गया....

1901 में जन्मे पं. रामचरण शर्मा जी की जीवन लीला यही 3 दिसम्बर 1980 को समाप्त नहीं हुई...अपितु उनके दिए उन्नत संस्कारों से पुष्पित- पल्लवित उनकी मुन्नी (पं. राकेशरानी जी) के रूप में, लौ की तरह देदीप्यान रही...लौ जो देशप्रेम की अगन में, दयानन्द के कार्य की तपन में, एम्स अस्पताल के AB8 ICU में काल के क्रूर हाथों से लड़कर, अपनी आराध्यस्थली वेद मन्दिर सभी को अचम्भित कर पुनः पुनः पहुंचीं.....

मौत की दस्तक को मानो हर बार कहतीं– **'अभी नहीं बहुत कार्य हैं जो पूर्ण करने हैं'–**

मुझे क्षीण होती जर्जर काया से निहारतीं...पूर्ण मनोयोग से मशीनों पर निर्भरता के उपरान्त भी कहतीं हैं..... "मुझे अपनी चिन्ता नहीं है, परन्तु तू मेरे बिना काम नहीं कर पाएगी....इस बेल को जिसका निरूपण तेरे दादा-दादी-नाना-नानी और पिता ने किया है, जीवित रखना है...उठ और कार्य कर!!.. अभी तुझे बहुत कार्य करने हैं!!".....

उनके लगभग 3 वर्ष के असाध्य कष्ट के उपरान्त जब चिकित्सकों ने भी जीवन की आस **नगण्य नहीं अपितु पूर्ण रूप से छोड़ दी थी** और विषम परिस्थितियों में मेरे क्षीण होते मनोबल को संभालते हुए.... अद्भुत जिजीविषा का परिचय दिया–मां पण्डिता राकेशरानी ने! और **ऐसी रूग्णावस्था में भी मुझे और पूर्ण कार्य को धरातल पर लाने का प्रयत्न किया 'डूबते को तिनके का सहारा दिया'....मानो....** भंवर में पड़ी मन:स्थिति और परिस्थिति को कुशल नाविक की तरह

मां पण्डिता राकेशरानी के माता-पिता
(नाना-पंडित रामचरण शर्मा एवं नानी-श्रीमती लीलावती शर्मा)

भंवर में ही तैरना और शनैः शनैः किनारे की ओर बढ़ना सिखाया...

हर विषम परिस्थिति में डटे रहना..."चाहे बाधाएं आएं तमाम और दानवीय हों प्रहार!" प्रभु पर आस्था रखना, सच्चे हृदय से कार्य के प्रति समर्पण और लौह मनोभावों की प्रेरणापुञ्ज ऐसी मां की प्रेरणा और उन्हें निर्मित करने वाले उस महामानव प. रामचरण शर्मा जी मेरे नाना जी को आज कर रही हूं अश्रुपूरित नमन!

नाना जी, जिन्होंने **मात्र 2 वर्ष की आयु से ही सन्ध्या के मन्त्र अपनी मुन्नी (राकेशरानी) को कराए कण्ठस्थ**.....मां लीलावती ने ....

"वेदों का डंका बजवा दिया आलम में ऋषि दयानन्द ने"

और......

"अपने स्वामी की आज्ञा बजायेंगे हम,
मरते दम स्वामी जो दिल का हाल जाहिर कर गए,
ओम के तीनों हरफ,
हृदय पर दाखिल कर गए,
अब तो वेदों का डंका बजायेंगे हम..."

जैसी लोरियां सुनाई घुट्टी में...

ऐसे माता-पिता की 2 वर्ष की मुन्नी आयु के 83वें चरण में भी मानों इन्हें चरितार्थ कर, वेदों की ऋचाओं की मानिन्द इन्हें गुञ्जा रही हैं...

नाना जी पं. रामचरण शर्मा जो आर्य समाज गाजियाबाद के प्रधान भी रहे और रेलवे कार्यालय के इंचार्ज, दिल्ली भी रहे...उसूलों के इतने पक्के कि जब उनकी गुणवती-अप्रतिम सौन्दर्य की धनी पुत्री राकेश के लिए डॉक्टर-इंजीनियर-IAS जैसे रिश्तों की भरमार थी, वहीं अखबार में विवाह के लिए 23 शर्तें पढ़ीं..... जिनमें ***कुछ शर्तें ये थीं–***

एक साड़ी में लड़की की विदाई होगी। नेग के नाम पर एक रुपया भी नहीं होगा। सामान के नाम पर एक चम्मच भी साथ नहीं होगा। साधारण भोजन-दाल रोटी ही बनेगी। बारात में केवल पांच बराती आयेंगे। कन्यापक्ष भी कोई दिखावा नहीं करेगा। ....

रिश्तेदारों का जमघट नहीं होना चाहिए। विवाह संस्कार के पश्चात यज्ञशेष में लड्डू आदि कुछ भी मिष्ठान्न विवाह में सम्मिलित लोगों में वितरित किया जा सकता है आदि-आदि। ....

(शेष पृष्ठ-15 पर)

यह चित्र सन् 1930 का है।

ऊपर की पंक्ति में बाएं से पाँचवे चौधरी चरण सिंह (भूतपूर्व प्रधानमंत्री)
तत्कालीन प्रधान आर्य समाज, गाज़ियाबाद पंडित रामचरण शर्मा
(नीचे की पंक्ति में दाएँ से दूसरे)

मां पण्डिता राकेशरानी के अमृत कण

शहीदों के चरणों में!

श्रद्धांजलि अर्पित करने की सामर्थ्य हम अपने में अनुभव नहीं कर पा रहे। आशा-श्रद्धा, आनन्द खोकर नैराश्य निशा में बैठकर उस ज्योति पुंज जीवित शहीद को कौन स्मरण कर सकता है??

प्राणों में प्रतिभा का प्रवाहित अजस्र स्रोत, जीवन में कर्म की गंगा का अविरल प्रवाह, शक्ति-भक्ति-साधना का संगम मिलकर कहलाया था श्रद्धानन्द!!......

शहादत उसका धर्म था, स्वभाव था, जीवन था, सत्य उसके रोम-रोम में रमा रहा था। ज्ञान से भरा उनका हृदय वेद की ऋचाओं से झंकृत था।

जीवन में जो ठीक समझा किया, विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहकर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया, सफलता पायी और सदा विजयी हुए।....

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के संस्थापक, अछूतोद्धार के उद्घोषक, स्वतन्त्रता संग्राम के सफल सेनानी, हिन्दू-मुस्लिम एकता के मार्ग दर्शक और शुद्धि मंत्र के प्रसारक के रूप में श्रद्धानन्द की दिव्य प्रतिभा को कौन विस्मृत कर सकेगा???

आज उनके बलिदान दिवस को मनाते हुए यह आवश्यक था कि हम उनके जीवन में झांक कर देखें।

हमारी इच्छा है कि उनका बलिदान दिवस हमारे लिए प्रेरणादायी हो और हमारे जीवन से निराशा और भटकाव को समाप्त कर दे, हम नई शक्ति के कार्य क्षेत्र में लगें और राष्ट्रीयता मानवता, ज्ञान, सत्य और श्रद्धा के प्रवाह को भूमण्डल में प्रवाहित करें।

धर्मान्ध व्यक्ति की गोली से वे शहीद हुए थे, किन्तु हम उनके कार्यों की पूर्ति कर उन्हें आज भी जीवित रख सकते हैं।.....

उत्सव, भाषण और प्रस्ताव नहीं...उनके कामों को पूरा करने का व्रत लेकर ही हम श्रद्धांजलि अर्पित करने के अधिकारी होंगे।

'धर्म' पर संकट हो और हम सोते रहें, गुरुकुल उजड़ते रहें और हम देखते रहें, आपस में लड़कर हम अपने घर जलाते रहें तो फिर कैसी शताब्दी, कैसी श्रद्धांजलि?

अंतर में झांक कर देखो, अपने को टटोलो और आगे बढ़ो। महान् आदर्शों को संभालो, रास्ता बदलो... भूलो नहीं, बलिदान का मार्ग–त्याग की राह... ज्योतिर्मय प्रकाश आपको बुला रहा है। ●●●

चारों वेद हिन्दी भाष्य सहित लागत ~~4000~~/-रु. से भी कम मूल्य में...

18 मार्च रविवार-महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती एवं स्वामी दयानन्द संस्थान के वार्षिकोत्सव

के उपलक्ष्य में - मात्र 2500/-रु. में उपलब्ध होगा

इस अवसर पर- दिनांक 14 मार्च (प्रातः 7.00 से 8.30 तक)

(वेदकथा एवं नित्य यज्ञ का आयोजन) तथा

राष्ट्ररक्षा संकल्प सम्मेलन (18 मार्च) (प्रातः 10:30 से अपराह्न 1:00 तक)

इस अवसर पर होगी यह ऐतिहासिक घोषणा...साक्षी बनने के लिए प्रार्थनीय हैं

सर्व श्री- **योगी आदित्यनाथ** (मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश), **आचार्य धर्मेन्द्र जी महाराज, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, महाशय धर्मपाल** (एम.डी.एच.), **डा. हर्षवर्धन** (केन्द्रीय मंत्री), **अश्विनी कुमार चौबे** (केन्द्रीय राज्य मंत्री), **सतपाल सिंह** (केन्द्रीय राज्य मंत्री), **आचार्य देवव्रत** (राज्यपाल, हि.प्र.), **स्वामी धर्ममुनि, स्वामी प्रणवानन्द, आलोक कुमार एडवोकेट** (सहप्रान्त संघचालक, दिल्ली), **सुबोध गुप्ता** (माइक्रोटेक ओकाया), **ठा. विक्रम सिंह,** (राष्ट्र निर्माण पार्टी), **रिखबचन्द जैन** (टी.टी.), **कैलाश सत्यार्थी** (नोबल पुरस्कार विजेता), **मनोज तिवारी** (सांसद एवं भाजपा अध्यक्ष दिल्ली), **बिजेन्द्र गुप्ता** (भाजपा विधायक एवं नेता प्रतिपक्ष दिल्ली), **मुन्ना कुमार शर्मा** (हिन्दू महासभा), **डा. श्यामसिंह शशि** (पद्मश्री), **आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, सत्यानन्द आर्य, डा. शोभा विजेन्द्र, संजीव सेठी** (फ्रंटियर), **डॉ. अशोक चौहान एवं आनन्द चौहान** (अमेटी ग्रेटर नोएडा), **अनुराग अग्रवाल** (आर्य इंजीनियरिंग कॉलेज), **प्रो. नरेन्द्र कुमार मेहरा** (पूर्व डीन, एम्स), **डॉ सुनील कुमार शर्मा एडवोकेट** (अध्यक्ष, बार एसोसिएशन, जयपुर), **नन्द कुमार थरेजा** (HCCT), **डॉ. एच.के.सिंह** (गुरुनानक हॉस्पिटल, सन्त नगर) **को भी आमंत्रित किया गया है।**

कार्यक्रम की सफलता हेतु सहयोग राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग **राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में, स्वामी दयानन्द संस्थान के खाता नं. 307902010054434, IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।**

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

संयोजकः दिव्या आर्य

पण्डिता राकेशरानी
अध्यक्ष-स्वामी दयानन्द संस्थान

स्थानः- वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर) दिल्ली-३६

वेदमन्दिर पहुंचने का मार्ग- अन्तर्राज्जीय बस अड्डा (कश्मीरी गेट) तथा किंग्ज़वे कैंप (जी.टी.बी. नगर) तक मैट्रो, वहां से बस नं. 192,162,143,105 द्वारा केशव नगर बस स्टैण्ड पहुंचें। किंग्ज़वे कैंप (जी.टी.बी. नगर) से ग्रामीण सेवा नत्थू पुरा मोड़ तक उपलब्ध है। (नत्थू पुरा मोड़ से वेद मन्दिर एक किलोमीटर है। जहां से रिक्शा आदि की सुविधा भी उपलब्ध रहती है।)

चलभाष : 8459349349, 9810257254 | E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

ARYA COLLEGE OF ENGG. & I.T.

(Approved by AICTE & Affiliated to RTU)

ESTD. YR. 2000

1800-266-2000 Kukas - Jaipur www.aryacollege.in

ARYA 1st OLD CAMPUS

CONTACT FOR ADMISSION

Prof. (Dr.) ARUN ARYA

93148-81683 | 98291-58955

Campus :
SP-42, RIICO Ind. Area,
Kukas, Delhi Road, Jaipur
Ph. : 0141 -6604555

REAP CODE 14

ORIGINALLY ESTABLISHED IN YEAR 2000

"THE PREMIUM AND BEST COLLEGE OF ARYA"

Highest Package in Rajasthan
Package ₹85 Lakh
HITESH PATHAK (Mech.)
SHASHTRI NAGAR, JAIPUR

One of the Highest Package in Rajasthan
Package ₹39 Lakh
SANDIP NAYAK (Mech.)
WEST BANGAL

One of the Highest Package in Rajasthan
Package ₹35 Lakh
KUMAR HARSHIT (ECE)
TARABAG, BANUCHAPAR, BETIAH

B. Tech. | M.Tech. | MBA

COURSES OFFERED

- AUTOMOBILE ENGINEERING
- COMPUTER SCIENCE & ENGG.
- ELECTRICAL ENGINEERING
- ELECTRONICS & COMM. ENGG.
- INFORMATION TECHNOLOGY
- MECHANICAL ENGINEERING

Felicitation of the Hon'ble CM Smt. Vasundhara Raje by Er. Anurag Agarwal

Felicitation of Prof. N. P. Kaushik Hon'ble V.C. RTU Kota at Arya College of Engg. & I.T.

राजस्थान में सर्वाधिक **PLACEMENT** दिलवाने वाला एकमात्र कॉलेज

100% PLACEMENT

The Global Education Excellence Award by Prime Time to Dr. Aparna & Er. Anurag Agarwal

Inauguration of Microsoft Innovation Centre By Mr. Joseph Landes to Er. Anurag Agarwal

Campus : SP-42, RIICO Ind. Area, Kukas, Delhi Road, Jaipur | Ph. : 0141 - 6604555

आपके-पत्र

आप दिव्य आलोक पुञ्ज हैं.....

मान्यवर/आदर्श बहन दिव्या जी,

सादर नमस्ते।

अक्टूबर 2017 का अनुपम जनज्ञान पढ़ा।..... पढ़कर अपार हर्ष और गौरव हो रहा है कि **आज की घोर घनेरी अज्ञानता की रात्रि में आप तथा माता जी महात्मा वेदभिक्षु की भांति एक दिव्य आलोक पुञ्ज बनकर बनकर निकली हैं।**.....

आर्याभाव संकटों का पहाड़ तथा प्राण हथेली पर लेकर निर्भीकतापूर्वक वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगी हैं तथा जनज्ञान के पाठकों को प्रेरित कर रही हैं।

महर्षि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी जनज्ञान में देकर एवं दुल्हन की तरह सजाकर प्रभावशाली शैली में प्रकाशित कर आर्य जगत को आह्लादित कर दी हैं। आप धन्य हैं। **आप माता-पिता के आदर्श कर्तव्यों को आगे बढ़ाने हेतु दृढ़ संकल्पी हैं। जैसे मार्च 2018 के पुण्य शुभावसर पर चारों वेद के हिन्दी भाष्यों को लागत मूल्य से भी बहुत कम मूल्य पर देने की दृढ़ प्रतिज्ञा की है।**.....प्रभु आपको तथा माता जी को सुस्वास्थ्य, सौ वर्षों की आयु तथा महर्षि के सपनों को पूरा करने की शक्ति दें। यही शुभकामना है। समय-समय पर मेरा भी आर्थिक सहयोग रहेगा।

–अमरेन्द्र आर्य, (झारखण्ड)

महात्मा वेदभिक्षुः जी....

अनुभव के बिन ज्ञान अधूरा है
ये बात जान लो......
वेदों को पढ़ना है धर्म हमारा
सभी मान लो.......
वेद सरल भाषा में लिखकर
वेद भिक्षु ने गाया,
अन्न नमक को त्यागा,
जन-जन को वेद सुनाया......
लीवर किया खराब मगर
संकल्प किया था पूरा.....
हम सबको वो करना है
जो काम बचा है अधूरा......
श्रद्धेय कैलाश जी ने.......
जो कुछ कहा उसे एक
छन्द में लिखा है– समर्पित है।

–डॉ. विजय आनन्द विद्यार्थी, सरस्वती विहार

अमर महात्मा वेदभिक्षुः के प्रति

–बृजकिशोर अश्क

हे कालजयी, हे युगपुरुष!
हे क्रान्तिदूत-हे वेदभिक्षुः,
है दिग्दिगन्त करता नमन!

करता नमन-करता नम!
तुम प्राण राष्ट्र के जीवन के!
रसगन्ध थे वैदिक उपवनके
है आज बिलखती देश आन!
ओ जीवन! हिन्दू कण-कण के!
हे कालजयी, हे युगपुरुष!
हे क्रान्तिदूत-हे वेदभिक्षुः,
है दिग्दिगन्त करता नमन!

अवरुद्ध ''हृदय मन्दिर'' सरिता!
''संस्थान दयानन्द है रीता,
''जनज्ञान'' आर्ष साहित्यों का!
लगता जैसे संधिराग मिटा!
हे कालजयी, हे युगपुरुष!
हे क्रान्तिदूत-हे वेदभिक्षुः,
है दिग्दिगन्त करता नमन!
करता नमन-करता नमन!

हिन्दुत्व-जय के प्रखर ऋभु!
ओ राष्ट्रवाद के मुखर ऋभु,
तुम गये हो क्या कि चला गया!
है आर्यराष्ट्र का संजात ऋभु

हे कालजयी, हे युगपुरुष!
हे क्रान्तिदूत-हे वेदभिक्षुः,
है दिग्दिगन्त करता नम!
करता नमन-करता नमन!

दयानन्द के कार्य के संवाहक!
ओ आर्यजगत् के प्रशस्त पावक
तूने अमर-अगणित उपकार किये!
संस्कृति की नाव के दक्ष नावक
हे कालजयी, हे युगपुरुष!
के क्रान्तिदूत-हे वेदभिक्षुः,
है दिग्दिगन्त करता नमन!
करता नमन-करता नमन!

दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु जी की पुण्य तिथि 20 दिसम्बर पर विशेष.........

उनकी लगन उग्र थी

–विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड

स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः जी को वैदिक साहित्य के प्रसार की उग्र लगन थी। इस निमित्त एक बार मुझे मिलने के लिये देहरादून भी आए थे। उनके आने का उद्देश्य था, मेरे लिखे ''सामवेद आध्यात्मिक भाष्य'' की प्राप्ति। ''चतुर्वेद हिन्दी भाष्य'' में उन्होंने इसे प्रकाशित करना था।

मैंने उन्हें सामवेद भाष्य देने का वचन दे दिया था। परन्तु इसे प्रकाशित करने हेतु मैं निज भाष्य को परोपकारिणी सभा, अजमेर को भेज चुका हुआ था। **मैंने अजमेर पत्र लिख कर भाष्य को वापिस कर देने को कहा। परन्तु वहाँ से उत्तर आया कि भाष्य मिल नहीं रहा। लगभग एक वर्ष तक यह गुम रहा।**

इसलिये भाष्य के बचे निर्देशों की सहायता से मैंने पुनः भाष्य लिखना प्रारम्भ कर दिया, ताकि महात्मा वेदभिक्षुः (तात्कालिक भारतेन्द्रनाथ जी) को मैं भेज सकूं।

परन्तु **महात्मा जी ने ''जनज्ञान'' में प्रकाशित किये हुए समय के अनुसार ''चतुर्वेद हिन्दी भाष्य'' को ग्राहकों के पास भेज देना था, इसलिये भाष्य के सम्पूर्ण होने की प्रतीक्षा वे न कर सके।** सामवेद भाष्य सम्पूर्ण लिख लेने के पश्चात् मैंने भाष्य महात्मा जी को भेज दिया और महात्मा जी ने उदारतापूर्वक इसे भी प्रकाशित कर दिया।.....

जिस अल्पकाल में महात्मा जी ने ''चतुर्वेद हिन्दी भाष्य''को आर्यजगत् के हजारों-लाखों परिवारों में भिजवा दिया, स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार का जो कार्य प्रारम्भ किया था.....आगे बढ़ाने में यह उस वेद प्रचार के कार्य को उनकी उग्र लगन का ही परिणाम था।

जब से महात्मा जी के साथ मेरा परिचय हुआ **'जनज्ञान'** मुझे नियमपूर्वक वे भेजते रहे। **''जनज्ञान''** में उनके लेख **''मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ''** बड़े मार्मिक और हृदयग्राही होते थे। **भाषा में प्रवाह, साहित्यिक छटा तथा ओज होता था।**

समय की माँग को भाँप कर महात्मा जी ने **''हिन्दू रक्षा समिति'' का संगठन तथा संचालन बड़ी तल्लग्नता के साथ किया।....**

यद्यपि भारत में हिन्दुओं की संख्या 85 प्रतिशत है, तो भी हिन्दुओं में परस्पर संगठन न होने के कारण हिन्दू राजनैतिक दृष्टि से पिछड़े रहे। **सिक्खों, मुसलमानों और ईसाइयों की अल्पसंख्या के होते हुए भी भारत की राजनीति में इन सब का महत्त्वशाली प्रभाव वर्तमान में भी है** और यह भय है कि समय पाकर कहीं हिन्दुओं पर मुसलमान और ईसाई प्रभुत्व न पा लें।......

इस भय को जानकर महात्मा जी ने **हिन्दू शक्ति को संगठित करना आवश्यक समझ और एकदर्थ-शारीरिक अवस्था के जर्जरित होते हुए भी-वे स्थान-स्थान पर जाते रहे और हिन्दू जनता को भावी भय से सचेत करते रहे।.... इस अत्यधिक परिश्रम का ही यह दुष्परिणाम हुआ कि वे अल्पायु में ही दिवंगत हो गए।**

महात्मा जी का एक और भी स्वप्न था। वह यह कि **आर्य मिशनरियों को तैयार कर वैदिक धर्म का प्रचार भारत तथा अन्य देशों में करें।** एतदर्थ एक विस्तृत भूखण्ड पर वेद मन्दिर की स्थापना भी उन्होंने की, जिसमें कई कमरों का निर्माण भी हो चुका है। परन्तु **महात्मा जी के अभाव में उनका यह स्वप्न भी स्वप्नमात्र ही रह गया प्रतीत होता है।** महात्मा जी के अभाव में जो उपर्युक्त ध्येयों में क्षति हुई है, उस की पूर्ति इस समय तो असम्भव सी दीखती है।

महात्मा जी की सी चहुमुखी प्रज्ञावाला कर्मठ कर्मयोगी आर्य समाज में इस समय कोई नजर नहीं आता।.........

महात्मा जी को परोपकाररत, पुनीत आत्मा को परमेश्वर ने सद्गति ही प्रदान की होगी- इस सम्बन्ध में कोई सन्देह प्रतीत नहीं होता।

-61, कांवली रोड, देहरादून

धन्य-धन्य है आर्य समाज!

–महात्मा वेदभिक्षुः (पं. भारतेन्द्रनाथ)

धरती का कण-कण है प्यासा, धरती मांग रही वरदान,
धरती की है लाज लुटी सी, धरती खो बैठी ईमान।

युद्ध द्वेष से संतप्त धरा को जीवन देगा आर्य समाज,
मतभेदों में बंटे मनुज को मिला सकेगा आर्य समाज,
आर्य समाज उठा सकता है, आर्य समाज सजा सकता है,
आर्य समाज बजा सकता है, टूट गए जो सारे साज।

सभी सदा उसके अपने हैं, सबसे ही उसको है प्यार,
सबका यह कल्याण चाहता, सबका ही करता उपकार,
सबके मन में कलुष कालिमा, दूर-दूर जो हो जाए तो,
सचमुच एक बने जग सारा, एक बने सब का आधार।

आर्य समाज सत्य-ज्ञान से सब को एक बनाता है,
एक प्रभु के ज्योतित पथ पर, सभी चलें, सिखलाता है,
शुभ कर्मों से मुक्ति मिलेगी, शुभ कर्मों का करो विचार,
कर्म धर्म में समता केवल आर्य समाज ही बतलाता है।

युग-युग से संचित पीड़ा को पीने वाला आर्य समाज,
जन-जन-मन घृणा-द्वेष को धोने वाला आर्य समाज,
प्यार सिखाता, प्यार जताता, प्यार निभाता आर्यसमाज,
प्रेम मन्त्र का प्रबल प्रसारक, धरती पर है आर्य समाज।

प्रभु से मिलना लक्ष्य हमारा, लक्ष्य सभी का केवल एक,
एक लक्ष्य के लिए भटकते-फिरते हैं यह प्राण-विवेक,
'एक' कहां है, कैसे मिलता, है बतलाता आर्यसमाज,
लक्ष्य सिद्धि का एक सहारा, इस धरती पर आर्य समाज।

भेद भाव की दीवारों को, गिरा रहा है आर्य समाज,
मृत्युगर्त में पड़े हुओं को उठा रहा है आर्य समाज।
भूले-भटके-बिछड़े प्राणी, मिला रहा है आर्य समाज,
सबके मन में जीवन-दीपक, जला रहा है आर्य समाज।

युग की रक्षा इष्ट जिन्हें हो, उनको हैं आमंत्रण आज,
काटो सारे बन्धन दुःख के, बन्द करो सब कटुता राग,
'ओ३म्' पताका बुला रही है, उसे संभालो बढ़कर वीर,
सारी धरती पर फहराओ, शान्ति सत्य का पावन राज।
आर्य समाज देश-जाति की गहरी खाई पाट रहा है,
आर्य समाज सत्य-ज्ञान को मुक्त भाव से बाँट रहा है,
आर्य समाज बढ़ा है आगे, करके मानव का उद्धार,
दानव दल पर करता है वह, पूर्ण शक्ति के वज्र प्रहार।

आर्य समाज मित्र है सबका, सबका ही होवे कल्याण,
सभी सुखी हों, रहें प्रेम से, यही धर्म है सत्य महान्
अर्थ-काम को धर्म-मोक्ष से, गति देता है आर्य समाज,
धरती को ही स्वर्ग बनाना, चाह रहा है आर्य समाज।

आर्य समाज सभी के मन में छेड़ रहा मधुमय संगीत,
सबको सुना रहा है जीवन का, झंकृत, उन्नत, पावन गीत,
सब को सत्पथ दिखलाता है, सबके कष्ट मिटाता है,
सबकी राह सरल करता है, सबकी चाह रहा है जीत।

पावनता सन्देश प्रसारक, धन्य-धन्य है आर्य समाज,
आर्य समाज यज्ञ संस्थापक, धन्य दयानन्द महाराज,
धन्य-धन्य वे जिनके बल से बढ़ता जाता, आर्य समाज,
ज्ञान ज्योति की गंगा बहती, कहती जाती... आर्य समाज!!

(अप्रैल 1975, "जनज्ञान" से)

(पृष्ठ-9 का शेष)

नाना जी मिले और वहीं रिश्ता पक्का कर आए. .. नानी **ने जिज्ञासा-वश पूछा था कि "लड़के के घर वाले कैसे है? लड़का काम क्या करता है?" नाना जी का उत्तर था–मेरी बात केवल लड़के से हुई है। वह यदि कहीं अकेला जंगल में बैठ जाएगा तो भी हमारी मुन्नी (अर्थात् मां पं.राकेशरानी) को कोई कष्ट नहीं होगा।** उसके विचारों में भी देव दयानन्द की क्रान्ति की भावना है, जो हमने मुन्नी को प्रदान की है।

और यह माह उन्हीं दो इतिहास रचने वालों पिताजी (21 दिसम्बर) और नाना जी (3 दिसम्बर) की पुण्यतिथि का साक्षी है जो न जाने कितने इतिहासों के सृजक बने!....

लिखना बहुत कुछ चाह रही हूं...शब्द भी घुमड़ रहे हैं परन्तु अभी अपने शब्दों को विराम दे रही हूं **"चरैवेति-चरैवेति"** के अपने पूर्वजों के पथ पर चलने के संकल्प के साथ...

प्रभु मां पण्डिता राकेशरानी का वरदहस्त चिरकाल तक बनाए रखे, उसकी असीम अनुकम्पा की ऋणी हूं. ....और रहूंगी सर्वदा!!....

❑❑❑

वैदिक-दर्शन

उपनिषदों में शरीरसंरचना विज्ञान

–डॉ. अनुराग शुक्ल

उपनिषत्साहित्य चिरप्रदीप्त वह ज्ञानदीपक है जो सृष्टि के आदि से प्रकाश देता चला आ रहा है और प्रलयपर्यन्त पूर्ववत् प्रकाशित रहेगा। उसके प्रकाश में वह अमरत्व है, जिससे सनातन आर्यों ने वैदिक धर्म के मूल का सिंचन किया है। **यह जगत् कल्याणकारी भारत की अपनी निधि है,** जिसके सम्मुख विश्व का प्रत्येक स्वाभिमानी सभ्य राष्ट्र श्रद्धा से नतमस्तक रहा है और सदा रहेगा। **अपौरुषेय वेद का अन्तिम अध्याय रूप यह उपनिषद् ज्ञान का आदिस्त्रोत और विद्या का अक्षय भण्डार है।** उपनिषदों का विषय आध्यात्मिक अधिक होता हुआ भी कम आधिभौतिक नहीं है।

शरीर से ही तप एवं कर्म सम्पादन सम्भव समझते हुए औपनिषदिक ऋषियों ने शरीर संरचना का विधिवत् अवगाहन किया है और इसे पाठ्यक्रम में प्रमुख स्थान भी प्रदान किया है। तैत्तिरीयोपनिषद् में शरीर को स्वस्थ रखने की शिक्षा प्रदान करने का उल्लेख है–**'शरीर मे विचर्षणम्'** (तै. उ. 1/4/1)। शरीर में ही आत्मा का निवास होता है। यह शरीर मरणधर्मा है। यह मुत्यु से ग्रसा हुआ है। **शरीर में निवास करने के कारण 'आत्मा' को 'शरीर' कहा गया है।**

ऋषियों ने शरीर की उपमा **'रथ' और 'पुर'** से दी है। **मानव शरीर में नौ अथवा ग्यारह द्वार हैं।** शरीर दो आंख, दो कान, दो नाक, एक मुख, एक तालु, एक नाभि, पायु और उपस्थ इन द्वारों वाला मानो एक **'पुर'** है। जिसमें अजन्मा आत्मा निवास करता है। **कठोपनिषद् में वर्णित है कि आत्मा रथी है, शरीर एक रथ है, बुद्धि सारथी है और मन लगाम है।** इन्द्रियां उस शरीर रूपी रथ में जुते हुए अश्व हैं तो सांसारिक भोग-विलास उन इन्द्रियरूपी अश्वों के विचरने के लिए गोचरभूमि हैं। यह सम्पूर्ण व्यवस्था की भोक्ता पदवाच्य है। देह में रहने के कारण परम तत्व आत्मा की संज्ञा **'देही'** हो जाती है।

ऋषियों ने मानव शरीर की उपमा एक वृक्ष से भी दी है। वनस्पतियों में जैसे वृक्ष हैं वैसे ही प्राणियों में पुरुष हैं। जैसे वृक्ष के **'पत्ते'** हैं वैसे पुरुष के **'लोम'** हैं। जैसे वृक्ष की बाहरी वल्कल (**छाल**) है वैसे ही पुरुष की 'त्वचा' (**खाल**) है। जैसे वृक्ष के काटने से **'गोंद'** झरता है। वैसे ही चोट लगने पर पुरुष की त्वचा से **'रुधिर'** बहता है। जैसे वृक्ष के वल्कल के नीचे नर्म **'तहें'** है वैसे ही पुरुष में **'नस नाड़ी'** हैं। जैसे वृक्ष में **लकड़ियां** हैं वैसे ही **पुरुष में हड्डियां** हैं। जैसे वृक्ष के अन्दर **गूदा** होता है वैसे ही पुरुष में **'मज्जा'** होती है।

शारीरिक संरचना–उपनिषदों में मानव शरीर के सभी स्वरूपों पर विचार किया गया है। मानव शरीर में **तीन 'पंचक'** हैं। मनुष्य शरीर में होने के कारण इन्हें *अध्यात्म पंचक* कहते हैं।

प्रथम पंचक–प्राण, व्यान, अपान, उदान और सम्मान।

द्वितीय पंचक–चक्षु, श्रोत, मन, त्वक् और वाक्।

तृतीय पंचक–चर्म, मांस, स्नायु, अस्थि और मज्जा।

समष्टि-व्यष्टि शरीर–जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में है। **मानव शरीर देवताओं का आयतन अर्थात् निवास स्थान माना गया है।** सृष्टि के आरम्भ में देवताओं ने ही इन्द्रियों के रूप में शरीर में प्रवेश किया था। **अग्नि ने वाणी बनकर मुख में, वायु ने प्राण होकर नासिकाओं में, आदित्य ने चक्षु के रूप में नेत्रों में, दिशाएं श्रोत होकर त्वचा में, चन्द्रमा मन बनकर हृदय में, मृत्यु अपान होकर नाभि में और जल वीर्य होकर जनन-प्रदेश में प्रविष्ट हो गए।....**

ब्रह्माण्ड	**पिण्ड**	**इन्द्रिय**
अग्नि	मुख	वाणी
वायु	नासिका रन्ध्र	प्राण
आदित्य	नेत्र	चक्षु
दिशाएं	कान	श्रोत्र
ओषधि वनस्पति	त्वचा	लोम
चन्द्रमा	हृदय	मन
मृत्यु	नाभि	अपान
जल	शिश्न	वीर्य

इन्द्रियां और उनके विषय –

बृहदारण्यकोपनिषद् में इन्द्रियां और उनके विषयों का भी सविस्तार निरूपण प्राप्त होता है। आत्मा के ही सर्वाश्रयत्व सिद्धि के प्रसंग में अनेक दृष्टान्तों के वर्णन में इन्द्रियों व उनके विषयों का सुन्दर निरूपण हुआ है। **तदनुसार**–सब स्पर्शों का **त्वचा,** सब गन्धों का **नासिका,** सब रसों का **जिह्वा**, सब रूपों का **चक्षु,** सब शब्दों का **श्रोत्र,** सब संकल्पों का मन, सब विद्याओं का **हृदय,** सब कर्मों का **हाथ,** सब आनन्दों क उपस्थ, सब विसर्गों (विसर्जन-मलत्याग) का **पायु** और सम्पूर्ण गति के **पांव ही अयन** अर्थात् आधार हैं।

विभिन्न इन्द्रियों के विभिन्न विषयों का निरूपण उपनिषदों में प्राप्त होता है। ऐतरेयोपनिषद् में मुख, नाभि और शिश्न का तथा छान्दोग्योपनिषद् में जरायु (जेर) उल्ब (गर्भ बन्धन) धमनियों (शिराओं) और बस्तिगत जल (मूत्र) का उल्लेख मिलता है।

उपनिषदों में इन्द्रियों व उनके विषयों का वर्णन अनेकशः प्राप्त होता है जिसका विवरण इस प्रकार है–

इन्द्रिय	**विषय**
चक्षु	रूप
श्रोत्र	शब्द
घ्राण	गन्ध
रस	रस
त्वचा	स्पर्श
वाक्	बोलना
हस्त	ग्रहण करना
उपस्थ	आनन्द और भोग
पायु	मल विसर्जन
पाद	गति
मन	मनन
बुद्धि	ज्ञेयता
अहंकार	अहंकार करने योग्य विषयवस्तु
चित्त	चेतना
तेज	प्रकाश्य
प्राण	आधार-आधेय

अस्थिपंजर–मानव शरीर की आभ्यन्तरिक संरचना का उल्लेख सर्वप्रथम संहिताओ में उपलब्ध होता है। अस्थिपंजर का ही नहीं अपितु शरीर के विभिन्न भागों का सन्दर्भ यजुर्वेद में मिलता है। **शतपथ ब्राह्मण में समाज मानव शरीर की अस्थियों की संख्या 360 वर्णित की गई है।** सिर के लिए बहुधा प्रयुक्त शब्द **'मूर्धा'** है।......**सिर के तीन भाग हैं**–जिनके अन्तर्गत **त्वचा, अस्थि और मस्तिष्क** आते हैं। सिर के तीन भागों का निरूपण इसी ब्राह्मण में पहली बार हुआ है। अन्यथा पूर्ववर्ती वाङ्मय में सिर का अंगरूप में ही उल्लेख हुआ है। सिर और धड़ की अस्थियों की संख्या का निरूपण इस प्रकार किया गया है–

गले में– 15 अस्थियां, 14 अनुप्रस्थ (प्रवर्ध) और 1 मध्य में स्थित शक्ति की अस्थि।

वक्ष के भाग में– 17 अस्थियां, 16 जत्रु और 17वीं उरस्।

मेरूदण्ड के उदरभाग में–21 अस्थियां, 20 अनुप्रस्थप्रवर्ध (कुन्ताप) और 21वीं उदरभाग।

दोनों पाश्वों में–27 अस्थियां, 26 पसलियां (पर्शु) और 27वीं के रूप में दोनों पार्श्व।

मेरूदण्ड के वक्ष भाग (अनूक) में–33 अस्थियां, 32 अनुप्रस्थ प्रवर्ध और 33वीं वक्ष का भाग।

उपनिषद्वाङ्मय में बृहदारण्याकोपनिषद् में ही अश्वमेधीय यज्ञ के सन्दर्भ में अस्थिपंजर एवं विभिन्न अंगों का उल्लेख प्राप्त होता है। **शारीरिक अवयवों में शिर प्रधान है।** नेत्र, प्राण, मुख, आत्मा, पृष्ठभाग, उदर, पाज (तलुवा), **पार्श्वभाग**–पसलियां(**पशर्वः पार्श्वास्थीनि** पार्श्वभाग की अस्थियां) अंग, अंगसन्धियों, **प्रतिष्ठा**–पैर (**प्रतिष्ठा पादाः प्रतितिष्ठात्येतैरिति** अर्थात् पांव) क्योंकि इनके द्वारा ही मनुष्य प्रतिष्ठित होता है!!...अस्थियां, मांस, ऊर्वध्य (उदरस्थ अर्धजीर्ण अन्न), क्लोम (यकृत और क्लोम हृदय के अधोभग में सीधे और बायें दो मांसखण्ड हैं), लोम, केश, पूर्वार्ध अर्थात् **नाभि के ऊपर का भाग उत्तरार्ध** (नाभि से नीचे का भाग), और वाणी का उल्लेख प्राप्त होता है।

मुख–शरीर का प्रधान अंग मुख है। नीचे का जबड़ा मानो **'पूर्वरूप'** है और ऊपर का जबड़ा मानो **'उत्तररूप'** है। इन दोनों के संयोग से और इनके मध्यभाग में अभिव्यक्त होने वाली वाणी ही मानों **'संधि'** है। **जिह्वा ही इस वाणी रूपी संधि को प्रकट करने का 'संधान' है।**

मुख में दोनों तालुओं के बीच जो स्तन की तरह लटकता रहता है उसे 'इन्द्रियोनि' अर्थात् जीवात्मा की योनि कहा गया है जैसे योनि गर्भ से निकलने का मार्ग है। वैसे ही मुक्तात्मा के लिए **सुषुम्णा नाड़ी है जो काकु (Uvula) में से गुजर कर कपाल को भेदकर, बालों का जहां अन्त है वहां से जाती है।**....वह सुषुम्णा नाड़ी के शरीर से निकलने का मार्ग है।

'शीर्षकपाले' शब्द से ज्ञात होता है कि सिर की खोपड़ी में दो कपाल होते हैं। **जीवात्मा उस कपाल के जिसे देह की सीमा बताया गया है, दो भागों में विदीर्ण करके, इसी द्वार से देह में प्रविष्ट होता है इसीलिए इस द्वार को 'विदृति' कहते हैं।** विदृति का अर्थ है–**'विदारण'**। अर्थात् ये दोनों कपाल अलग-अलग हैं, फटे हुए हैं। अतः **जीवात्मा का देह में प्रवेश करने और निष्क्रमण करने का यही 'द्वार' है।**

नेत्र संरचना–नेत्र संरचना का सूक्ष्म विवेचन बृहदारण्यकोपनिषद् में मिलता है। नेत्रों की लाल रेखाओं, नेत्रस्थ जल, कनीनका (पुतली) अर्थात् दर्शनशक्ति, कालिमा, शुक्लता, नीचे और ऊपर की पलकों (वर्तन्या)

का स्पष्टत: उल्लेख प्राप्त होता है। नेत्रों में सर्पि अर्थात् घी एवं उदक अर्थात् पानी डालने और उसके पलकों में चले जाने का विवरण भी उपलब्ध होता है।

हृदय संरचना–प्रमुख उपनिषदों में 'हृदय' शब्द का सन्दर्भ लगभग 50 बार मिलता है। हृदय आत्मा का स्थान है। **प्राणिमात्र के हृदय में आत्मा है और वह 'अंगुष्ठमात्र' है।**

अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये संनिविष्टः।

यह शरीर ब्रह्मपुर है। इस ब्रह्मपुररूप शरीर में एक **'दहर पुण्डरीक वेश्म'** है इसक तात्पर्य यह है कि यह शरीर ब्रह्मरूप की नगरी है–**'ब्रह्मपुर'** है। इसमें एक **'दहर'** अर्थात् छोटे से कमल के समान हृदयरूपी वेश्म अर्थात् घर है। इस हृदयरूपी मन्दिर में एक छोटा सा अवकाश है। इसी में जीवात्मा का अधिष्ठान है। शरीर में हृदय मानो सूर्य है। उसकी पिङ्गल, शुक्ल, नील, पीत, लोहित वर्ण की नाड़ियां सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं और रस से भरी हुई किरणों के समान सब ओर फैली हुई हैं।

तात्पर्य यह है कि पित्तसंज्ञक सौरतेज़ परिपक्व हुए थोड़े से कफ़ के साथ सम्पर्क होने पर पिङ्गल वर्ण का हो जाता है। वही 'वात' (वायु) की अधिकता होने पर नीला हो जाता है और कफ़ से वात की समता होने पर शुक्ल हो जाता है और 'रक्त' की अधिकता होने पर लोहित!....किन्तु श्रुति के अनुसार आदित्य के साथ सम्बन्ध होने से ही नाड़ियों में अनुस्यूत हुए उस तेज से ही वर्ण विशेष हो जाते हैं। परन्तु यह कैसे सम्भव है? ऐसा प्रश्न होने पर कहा जाता है कि **यह आदित्य वर्णतः पिङ्गल है, यह आदित्य शुक्ल भी यही नीलवर्ण है। यही पीला है और वही लोहित भी है', इसीलिए नाड़ियों के रंग ऐसे हैं।**

हृदय की नाड़ियाँ– हृदय की **एक सौ एक** नाड़ियां है। उसमें एक (carotid Artery) मूर्धा की ओर निकलती है। **इस नाड़ी के द्वारा ऊपर की ओर जाने वाला जीव अमरत्व को प्राप्त करता है। दूसरी नाड़ियों से उत्क्रमण करने पर जीव की भिन्न-भिन्न गति होती हैं।....**इसका तात्पर्य यह है कि वे संसारप्राप्ति की द्वारभूत हैं। इसीलिए वे प्राणप्रयाण के लिए ही होती हैं।

ये सौ नाड़ियां ही मरते समय मनुष्य को विभिन्न योनियों में ले जाती हैं। हृदय से **72 हजार नाड़ियां निकलती हैं जिन्हें 'हिता' कहते हैं** क्योंकि ये हित करती हैं। अन्त में जाकर 'पुरीतत' (capillaries) हो जाती हैं। **इन्हें पुरीतत इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये शरीर में फैल जाती हैं।**

इन पुरीतत नाड़ियों में से एक नाड़ी **'सुषुम्णा'** है। **सुषुप्तावस्था में जीवन इन पुरीतत नाड़ियों में से सरककर इसी सुषुम्णा नाड़ी में जाकर शयन करता है।**

हृदय के पांच देवसुषि–इन हजारों नाड़ियों के साथ-साथ हृदय के पांच देवसुषि अर्थात् द्वार हैं– **प्राङ्सुषि, दक्षिणसुषि, प्रत्यङ्सुषि, उत्तरसुषि और उर्ध्वसुषि हैं।....**

इसका तात्पर्य यह है कि **हृदय के पांच द्वार हैं।** इसका **पूर्वद्वार 'प्राण'** है, चक्षु है, ब्रह्माण्ड में पूर्वद्वार, **'आदित्य'** है। इसका **दक्षिणद्वार 'व्यान'** है, श्रोत्र है, ब्रह्माण्ड में दक्षिणद्वार **'चन्द्रमा'** इसका पश्चिमद्वार **'अपान'** है, वाक् है, ब्रह्माण्ड में **पश्चिमद्वार 'अग्नि'** है। इसका **उत्तरद्वार 'समान'** है, मन है, ब्रह्माण्ड का **उत्तरद्वार 'पर्जन्य' है,** 'मेघ' है। इसका **उर्ध्वद्वार 'उदान'** है, वायु है, ब्रह्माण्ड में उर्ध्वद्वार **'आकाश'** है।

पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड के ये पांच द्वारपाल हैं।

देह से सम्बन्ध रखने वाली **ये हिता नाम से विख्यात नाड़ियां अत्यन्त सूक्ष्म होती हैं। लोक में जैसे सहस्त्र भागों में विभक्त किया हुआ केश अत्यन्त सूक्ष्म हो जाता है। वैसे ही ये नाड़ियां सूक्ष्म हैं।....**

ये हृदय से सब ओर फैली हुई हैं। इन्हीं अत्यन्त सूक्ष्म नाड़ियों से जाता हुआ यह अन्न शरीर में सर्वत्र जाता है।.....स्थूल शरीर अन्न से वृद्धि को प्राप्त होता है और लिंगदेह सूक्ष्म अन्न से वृद्धि को प्राप्त हुआ स्थित रहता है।

प्रश्नोपनिषद् में पुनः हृदय की 101 नाड़ियों का वर्णन तो उपलब्ध होता ही है साथ ही यह भी वर्णित है कि इनमें से प्रत्येक की सौ-सौ शाखाएं हैं।

उन शाखाओं से भी एक-एक से **बहत्तर-बहत्तर हजार** प्रतिशाखा रूपी नाड़ियां निकलती हैं। इस प्रकार कुल नाड़ियां है–

$$101 \times 100 \times 72000 = 72,72,00,000$$

हृदय से लेकर इस सम्पूर्ण **'रक्त-संचारिणी-संस्थान'**(circulatory system)में **व्यान** विचरता है। गुदा तथा उपस्थ भाग में **'अपान'** विचरण करता है

अपान का अर्थ (अप+आन Alimentary system) **नीचे की तरफ जीवन है।** चक्षु, श्रोत्र, मुख, नासिका में स्वयं **'प्राण'**(प्र+आन Respiratory system)रहता है। **शरीर के मध्य भाग में 'समान'** (सम+आन digestive system) प्रतिष्ठित है।

'**समान**' प्राण ही शरीर में पड़े हुए **अन्न को 'सम' करके अर्थात् एक रस बनाकर शरीर में सात ज्योतियां प्रज्वलित हो जाती हैं।** दो आंख, दो नाक, दो कान, तथा एक मुख–ये सात शरीर की ज्योतियां हैं जिन्हें समान प्राण द्वारा रस मिलता है। **हृदय से एक नाड़ी उदान उर्ध्वदेश मस्तिष्क को जाती है।** उसमें '**उदान**' प्राण ऊपर की ओर विचरण करता है।

हृदय में ही आत्मा का निवास है। 'हृदि एष आत्मा।' हृदय इसीलिए कहते हैं कि **'हृदि+अयम्'** 'वह आत्मा हृदय में है।'

स वा एष आत्मा हृदि तस्यैतदेव निरुक्तं हृद्ययमिति।

हृदय शब्द की यही निरुक्ति-निवर्चन है कि **'आत्मा अपने हृदय में है।** हृदय की प्रजापति है। यह ब्रह्म है। यह सर्व है। हृदय तीन अक्षरवाला नाम है। हृ+**द**+**य**=हृदय।

'हृ'–यह पहला अक्षर है जो 'हृञ् हरणे' धातु से बना है, इसका अथ है–अभिहरण अर्थात् लाना।

'द'–यह दूसरा अक्षर है जो 'दा दाने' धातु से बना है, इसका अर्थ है–देना।

'य'–यह तीसरा अक्षर है जो 'इण् गतौ' धातु से बना है, इसका अर्थ है–जाना।

हृदय की इस व्युत्पत्ति से ज्ञात होता है कि हृदय को हृदय इसलिए कहते हैं कि यह तीन काम करता है। **'हृ' से 'हरित' 'द' से 'ददाति' और 'य' से 'याति'–अर्थात् यह लेता है, देता है और चलता है।**

हृदय द्वारा ही शरीर में रक्त का लेना-देना होता रहता है। हृदय शरीर में अशुद्ध रक्त को लेकर फिर उसे फेफड़ों द्वारा शुद्ध कर शरीर को देता रहता है। इसी उद्देश्य से जन्म से मृत्यु-पर्यन्त गति करता रहता है। **हृदय शब्द के अर्थ में ही रुधिर की गति** (Circulation of Blood) **का भाव निहित है।**

●●●

(विभागाध्यक्ष-संस्कृतविभाग मदनमोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कालाकॉकर प्रतापगढ)

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

**जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुँजाएं॥**

अन्तिम कवर पृष्ठ	35000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	35000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	30000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	20000/-रुपए
आधा पृष्ठ	10000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	5000/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में **खाता नं. 307902010056883**
IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।
बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

विज्ञापन व्यवस्थापक- *जनज्ञान-मासिक*

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर), दिल्ली-110036

अन्धविश्वास के जीवन की समाप्ति

–स्वामी श्रद्धानन्द

**अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितमन्यमानाः।
जघन्यानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः॥1**

जहां प्रातःकाल गंगास्नान से पहले कुश्ती का दौर फिर प्रारम्भ हो गया था और डलिया झारी लेकर विश्वनाथादि की पूजा-अर्चना करके जलपान करना नित्य कर्म विधि का एक अंग बनाया गया था वहां सायंकाल भ्रमण के पीछे मैं रात्रि का ब्यालू करता था।

पौष 1932 के अन्त में एक दिन भ्रमण करने ऐसी ओर गया जहां से मेरा निवास स्थान समीप न था। दूर चले जाने से लौटना साढ़े सात बजे हुआ। कुछ आराम करके आठ बजे दर्शनों के लिए चला। विश्वनाथ का मन्दिर एक ही गली में है जिसके दोनों ओर पुलिस का पहरा था। मैं विश्वनाथ की ओर से फाटक पर पहुंचा तो पहरेवालों ने मुझे रोक दिया। **पूछने पर पता लगा कि रीवां की रानी दर्शन कर रही हैं, उनके चले जाने पर द्वार खुलेगा।**....मुझे कुछ खिसियाना-सा देख पुलिसमैन ने, जो मेरे पिता की अर्दली में रह चुका था, मोढ़ा बैठने को रख दिया। **मैं एक पल को बैठ तो गया परन्तु विचार कुछ उलट गए। इस रुकावट से दिल पर ऐसी ठेस लगी जिसका वर्णन लेखनी नहीं कर सकती।**

जी घबरा गया और मैं उठा और उल्टा चल दिया। पहरेवाले ने बहुत पुकारा परन्तु मैंने घर आकर ही दम लिया। आहट पाहट पाक भृत्य भोजन लाया तो क्या देखता है कि मैं कपड़े पहिरे ही बिस्तरे पर लेट रहा हूं। कह दिया कि भोजन नहीं करूंगा। नौकर मेरे आग्रह करने पर स्वयं खाना खाकर सो गया।

> ***मुझे वह रात जागते बीती। मन की विचित्र व्याकुल दशा थी....प्रश्न पर प्रश्न उठते थे–क्या सचमुच वह जगत् स्वामी का दरबार है जिससे एक रानी उसके भक्तों को रोक सकती है? क्या यह मूर्ति विश्वनाथ की हो सकती है या वे देवता कहला सकते हैं जिनके अन्दर पक्षपात हो? परन्तु मूर्ति को देवता किसने बनाया? नित्य मेरे सामने संगतराश ही तो मूर्तियां बनाते हैं...!!"***

कभी व्याकूल होकर दस-बीस मिनट टहलता, फिर बैठ जाता। फिर दूसरी ओर प्रश्नावली की लहर पर लहर उठती– "जब सांसारिक व्यवहारों में पक्षपात है तो देवताओं के दरबार में उसका दखल क्यों न हो। **क्या मनुष्यों ने भी पक्षपात देवताओं से सीखा? क्या मेरे स्वच्छन्द जीवन ने तो मुझे अविश्वासी नहीं बना दिया?"** गोस्वामी तुलसीदास के दोहे और चौपाइयां याद आने लगीं। जब नीचे लिखे दोहे का स्मरण हुआ तो अश्रुधारा बह निकली–

बार-बार वर मांगहूं, हर्ष देहु सिय रंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥

एक घण्टे तक आंसुओं का तार बंधा रहा, अपने इष्टदेव महावीर से प्रकाश के लिए प्रार्थना की। परन्तु उस समय बालयति के ध्यान से भी कुछ न हुआ।

अन्त में रोना-धोना बन्द हुआ और प्राचीन यूनान रोम की मूर्तिपूजा के इतिहास पर मानसिक दृष्टि दौड़ गई। पहले जो लेख मूर्तिपूजा में रुचि दिलाते थे, उस पर नया प्रकाश पड़ने लगा। हिन्दू मूर्तिपूजा के विरुद्ध ईसाइयों की जो दलीलें पढ़ी थी उन्होंने मुझे हिन्दू देववाला से बेगाना बना दिया और आधी रात पीछे यह निश्चय करके सो गया कि अपने प्रिंसिपल पादरी ल्यूपोल्ट से संशय निवृत्त करूंगा।

दूसरे दिन पादरी ल्यूपोल्ट को मैंने जा घेरा। वह बहुत प्रसन्न हुए और मुझे अपनी कलीसिया में लाने के लिए बहुत मगजपच्ची की। **मेरे तीन दिनों के प्रश्नों से ही पादरी साहब घबरा गए** और मुझे Hopeless Case (निराशाजनक मामला) समझकर उन्होंने छोड़ दिया।

नास्तिकपन से मेरा चित्त अभी तक घबराता था। मुझसे अंग्रेजी पढ़ने बनारस संस्कृत कालेज के एक विद्यार्थी आया करते थे। वह दर्शनों का अभ्यास करते और योग्य विद्वान् थे। **अंग्रेजी इसलिए पढ़ते थे कि उसके कारण उसकी छात्रवृत्ति तिगुना हो सकती थी।** इन्होंने मुझे लघु कौमुदी पढ़ानी आरम्भ कर दी। व्याकरण में भी इनकी अच्छी गति थी। उनसे भी एक दिन स्वभावतः बातचीत हुई **उनकी युक्तियों ने मुझे शांत तो न किया, उल्टी संस्कृत से ही मुझे घृणा हो गयी।** मैंने पण्डित विद्याधर से कह दिया कि संस्कृत में कोई अक्ल की बात ही नहीं और इसलिए अब मैं कौमुदी न पढ़ूंगा। परन्तु पण्डित जी मुझसे सरेस की तरह चिपक गए और थोड़ा बहुत व्याकरण का बोध करा के ही मुझे छोड़ा, अस्तु!

यह तो आगे की बात है। **सारांश यह कि हिन्दू मूर्तिपूजा से मुझे घृणा हो गई,** प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की दलीलें पोच मालूम हुई, हिन्दू शास्त्रज्ञ मेरी शान्ति न कर सके, इसलिए कुस्ती और गंगास्नान का नियम स्थिर रखते हुए भी दर्श स्पर्श से मुक्ति मिल गई। परन्तु अश्रद्धा की ओर सर्वथा जाने में झिझक बाकी थी।

एक दिन सिकरौर छावनी की ओर घूमने जाते हुए एक

रोमन कैथोलिक पादरी मिल गए। बातचीत करते हुए उन्हें प्रोटेस्टेण्ट पादरी ल्यूपोल्ट की अपेक्षा अधिक विनयशील, शान्त और सहिष्णु पाया। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि यदि ख्रीष्टीय मत का तत्त्व जानना हो तो कैथोलिक कलीसिया के सिद्धान्तों को समझना चाहिए। उनके चर्च में मेरा आना-जाना शुरू हुआ। उनकी धार्मिक संस्थाओं तथा प्रार्थना सभाओं का मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ा। **मेरे श्रद्धासम्पन्न चित्त पर फादर लीफ के आचार व्यवहार का भी असर हुआ। मैं यहां तक उन पर मोहित हआ कि रोमन कैथोलिक विधि से बप्तिस्मा लेने को तैयार हो गया।**

मेरे एक ही मित्र को मेरे निश्चय का पता था परन्तु उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश ही न की।....फाल्गुन 1932 संवत् में यहा तक नौबत पहुंची कि बप्तिस्मा लेने की तिथि नियत करने के लिए मैं एक शाम को फादर लीफ की ओर गया। **स्वाध्याय के कमरे में वह थे नहीं, मैंने अन्दर के कमरे का पर्दा उठाया। पादरी साहब तो वहां थे नहीं परन्तु एक दूसरे पादरी और एक ब्रह्मचर्यवस्त्रधारिणी (Nun) को ऐसी घृणित दशा में पाया कि मैं उल्टे पांव लौट गया और फिर उधर जाने का नाम न लिया।....**

मुसलमानी मत की ओर से पहले ही उदासीन था क्योंकि पिताजी से जो उन लोगों के मुकद्दमे हुए उनमें उनके आचार व्यवहार कुछ उच्च न देखे गए। मुझे माला और तस्बीह दोनों से ही और 'ईसाई तस्बीह' (Rosary) तीनों से ही घृणा हो गई और कबीर भक्त का गीत कण्ठ हो गया जिसे मैं स्वर सहित गाया करता-

आऊंगा न जाऊंगा, मरूंगा न जीऊंगा।
गुरु के सबद प्याला, हरि-रस पीऊंगा।।
कोई जावे मक्के लै कोई जावे कासी।
देखो रे लोगो दोहू गल-फांसी।।
कोई फेरे माला ले कोई फेर तसबी।
देखो रे लोगों ये दोनों ही कसबी।।
यह पूजें मढ़ियां लै यह पूजें गौरां।
देखो रे लोगों ये लुट गई चारां।।
कहत कबीरा सुनो री लोई।
हम नाहिं किसी के हमरा न कोई।।

मजहब सम्प्रदाय था Religion से मेरा विश्वास उठ गया। मेरा मत यह हुआ कि मजहब एक ढकोसला है जो चालाक बुद्धिमानों ने आंख के अन्धों और गांठ के पूरों को फांसने के लिए गढ़ छोड़ा है। मैं अपने आपको पक्का नास्तिक समझकर अपने स्वभाव के अनुसार उस पर वेग से बह निकला।

पूजा, दर्शन का अंकुश दूर हो चुका था, अब श्रद्धाहीन होने के कारण गंगा-स्नान पर क्यों निष्ठा रहनी चाहिए थी परन्तु नहीं, जो स्वभाव बन चुका था उसका प्रभाव कैसे दूर होता? प्रातःकाल का उठना, कसरत, कुश्ती और गंगा-स्नान बराबर जारी रहे।

-(नूतन निष्काम से साभार) ●●●

जनज्ञान (मासिक) सदस्यता फार्म

कम से कम सौ घरों में पहुंचाएं जनज्ञान
यही है परिस्थिति का आह्वान

नामः..

पूरा पता...

....

पिनकोड .... मोबाईल ....

ई-मेल.. व्यवसाय ....

सदस्य संख्या (यदि आप पूर्व में सदस्य हैं तो)..................................

एक प्रति-25 रुपए,
पांच वर्ष-1200 रुपए, आजीवन-5100 रुपए, संरक्षक सदस्य-11000 रुपए

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी दयानन्द के परम शिष्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के संस्थापक, शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता, अंग्रेजों की संगीनों के आगे पक्ष खोलकर खड़े हो जाने वाले निर्भीक सन्यासी और **आज तक के इतिहास के अकेले ऐसे व्यक्ति जिन्होंने दूसरे धर्म का होते हुए भी दिल्ली की जामा मस्जिद में वेद मन्त्रों पर व्याख्यान दिया।** उस महान बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस 23 दिसम्बर पर शत्-शत् नमन्!...

ऋषि दयानन्द का परम शिष्य,
वह श्रद्धानन्द निराला था,
ऋषि आज्ञा में अपना जीवन,
जिसने अर्पित कर डाला था।
अपनी हर एक बुराई को,
ऋषि के वचनों से छोड़ा था,
"कल्याण मार्ग का पथिक" बना,
कितनों का जीवन मोड़ा था।
अपनी सारी संपत्ति को,
ऋषि मिशन हेतु कर दान किया,
अपने तन को, मन को, धन को,
कर देश के हित कुर्बान दिया
चट्टान सरीखा दृढ़ था वो,
फूलों के जैसा निश्छल था।
ऋषि दयानन्द के बतलाए,
वेदों के पथ का राही था,
सर्वदा अमिट जो रहती है,
वह उसी तरह की स्याही था।
दिल्ली में गोरों के सम्मुख,
जब उसने वक्ष अड़ाया था,
उसका वह साहस देख-देख,
हर एक गोरा थर्राया था।
वेदों के पुनः प्रचार हेतु,
थे गुरुकुल उसने खुलवाए,
भारत का भाग्य जगाने को,
हर बाधा से वे टकराए।
जलियांवाला के बाद नहीं,
कांग्रेस में साहस आया था,
तब अमृतसर में उसने ही,
फिर अधिवेशन करवाया था।
"सद्धर्म प्रचारक" के द्वारा,
उसने यह देश जगाया था,
अपने भारत में वह फिर से,
एक नई चेतना लाया था।

न आज तलक ऐसी घटना,
इतिहास में कोई पाई है,
जब एक हिन्दू ने मस्ज़िद में,
वेदों की गूंज सुनाई है।
धरमों के ठेकेदारों का,
उसने ही कलेजा फाड़ा था,
"त्वं ही नः पिता वसो" जब वह,
मस्ज़िद में बोल दहाड़ा था।
साहस की वह तो मूरत था,
था आर्य धर्म का अभिमानी,
नेता, पण्डित, गुरु दानवीर,
था उच्च कोटि का वह ज्ञानी।
लाखों परधर्मी हुए दलित,
भाइयों को वापस लाया था,
शुद्धि वाले आन्दोलन का,
उसने ही चक्र चलाया था।
ऋषि दयानन्द का परम शिष्य,
हर पथ पर आगे बढ़ता था,
मुस्लिम हो चाहे गोरे हों,
सबको दिन-रात रगड़ता था।
हो गया जगत् उसका शत्रु,
और फिर उसका वध कर डाला,
दिल्ली में उस संन्यासी ने,
जीवन को अर्पित डाला।
उत्तराधिकारी ऋषिवर का,
पक्का ईश्वर विश्वासी था,
बेताज बादशाह दिल्ली का,
वह श्रद्धानन्द संन्यासी था।
जब तक इस दुनियां में,
दिन-रात और यह शाम रहे,
तब तलक हमारे दिल में भी,
श्रद्धानन्द जी का नाम रहे।

❖❖❖

23 दिसम्बर बलिदान दिवस पर...

धार्मिक सद्‌भावना के आलोकपुंज
स्वामी श्रद्धानन्द

–अखिलेश आर्येन्दु

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक शुद्धि आन्दोलन के संवाहक, सद्धर्म प्रचारक पत्र के सम्पादक के रूप में ही स्वामी श्रद्धानन्द को याद नहीं किया जाता....बल्कि **उनका नाम जामा मस्जिद की प्राचीर से हिन्दू-मुसलमानों को वेदपाठ के साथ सम्बोधित करके अंग्रेजी शासन की क्रूरताओं से निजात पाने, दलित विधवाओं एवं अनाथों को बल देने के साथ भी जुड़ा हुआ है।.....**

स्वामी श्रद्धानन्द जिनका जन्म सन् 1856 में जालन्धर के तलवन नामक स्थान पर हुआ था। उनका बचपन का नाम **मुंशीराम** था। पिता नानकचन्द अंग्रेजी हुकूमत में सूबेदार मेजर थे। मुंशीराम नानकचन्द की सबसे छोटी सन्तान थे।

इनका बचपन कई तरह के दोषों से दूषित हो गया। शायद ऐसा कोई कुकर्म नहीं बचा था जो मुंशीराम से छूटा हो। परन्तु महर्षि दयानन्द की ओजस्वी वाणी से इनकी काया पलट हो गई।

इस बात को अपने जीवन चरित्र "**कल्याण मार्ग का पथिक**" में मुंशीराम (श्रद्धानन्द) लिखते हैं, (महर्षि दयानन्द के शताब्दी वर्ष पर श्रद्धांजलि का अंश) परन्तु **तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदय पटल पर अब भी ज्यों की त्यों अंकित है।** मेरे निर्मल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि **कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र से आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी ही गिरी हुई आत्माओं की काया पलट कर दी। इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है, परमात्मा के बिना!!....**

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हो या महिला महाविद्यालय की शुरुआत अथवा **स्त्रियों को पूर्ण अधिकार दिलाने की बात हो,** स्वामी श्रद्धानन्द का यह कार्य शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी कदम था।

पराधीन भारत में महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड, अन्ध-विश्वास, धर्मान्तरण, ईसाईकरण और जातिवाद के खिलाफ जो शंखनाद किया था, स्वामी श्रद्धानन्द ने उसे तेजस्विता देकर आगे ही नहीं बढ़ाया बल्कि उसमें संजीवनी जैसी शक्ति फूँकी।

अंग्रेजी एवं अंग्रेजियत, मुस्लिमपरस्ती के खिलाफ जहाँ उन्होंने सद्धर्म का डंका बजाया वहीं उन्होंने दोनों जातियों को (एक) राष्ट्रीय धारा में लाने का अद्‌भुत कार्य किया।

30 मार्च 1919 को दिल्ली में पूर्ण हड़ताल थी। अंग्रेजी शासन के जुल्म एवं शोषण के खिलाफ भारतीय जनता सड़कों पर उतर आई थी। उस हुजूम का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द ने किया।.....**जब अंग्रेजी सिपाहियों को गोली चलाने का हुक्म हुआ तो सिंह गर्जना करते हुए स्वामी जी सीना तानकर आगे बढ़े और बोले, लो मैं खड़ा हूँ, चलाओ गोली। इस भारतीय सपूत की दहाड़ के आगे लाचार होकर अंग्रेजी सिपाहियों को अपने पैर पीछे खींचने पड़े।**

राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सद्‌भावना और सांस्कृतिक (समाज) समरसता बनाए रखने के लिए....**राष्ट्रधर्म, राष्ट्रवाद, स्वभाषा, स्वसंस्कृति स्वाभिमान और स्वधर्म की ज्योति को निरन्तर जलाए रखने के लिए स्वामी ने अनगिनत कार्य किए।** तमाम दफे प्राण को जोखिम में डालकर दलित हिन्दुओं, स्त्रियों एवं बच्चों के जान-माल की रक्षा की।

आर्यसमाज के द्वारा स्वामी जी ने धर्मान्तरण को रोकने, स्वभाषा का प्रचार करने, विधवाओं को पुनः विवाह के लिए प्रोत्साहन देने, सत्य का प्रचार-प्रसार करने, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के जहाँ उन्होंने अनेक परोपकार पूर्ण कार्य किए, वहीं **कांग्रेस खासकर गाँधी जी के नेतृत्व में उन्होंने असहयोग आन्दोलन और कांग्रेस के अधिवेशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।......**

एक मतान्ध मुसलमान द्वारा दिल्ली के चाँदनी चौक में हत्या (**२३ दिसम्बर १९२६**) कर देने से माँ भारती का यह भास्कर हमेशा के लिए अस्त हो गया।

❑❑❑

17 दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस है...

महान् क्रान्तिकारी-राजेन्द्र लाहिड़ी

–सुधा अग्रवाल

कल मैंने सुना कि प्रिर्वी कौंसिल में मेरी अपील अस्वीकार कर दी। आप लोगों ने हम लोगों की प्राण रक्षा के लिए बहुत कुछ किया, कुछ उठा नहीं रखा, पर मालूम होता है कि **देश की बलिवेदी को हमारे रक्त की आवश्यकता है। मृत्यु क्या है? जीवन की दूसरी दिशा के अतिरिक्त और कुछ नहीं।** इसलिए मनुष्य मृत्यु से दुःख और भय क्यों माने? वह तो नितान्त स्वाभाविक अवस्था है **उतनी ही स्वाभाविक जितना प्रभातकालीन सूर्योदय!!** यदि यह सच है कि इतिहास पलटा खाया करता है तो मैं समझता हूँ कि हमारी मृत्यु व्यर्थ नहीं जायेगी। सबको मेरा अन्तिम नमस्कार!!.....

उक्त विचार क्रान्तिवीर राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी द्वारा फाँसी के तीन दिन पूर्व 14 दिसम्बर 1927 को लिखा गया था। काकोरी काण्ड के जिन चार अभियुक्तों को फाँसी की सजा हुई, उनमें राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी भी एक थे। अन्य व्यक्ति थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशनसिंह और अशफाकउल्ला।

क्रान्ति की भावना जन-जन में जगाने हेतु क्रान्तिकारी दल को धन की आवश्यकता थी। **अस्त्र-शस्त्र क्रय करना, पर्चे छपवाना, आने-जाने का व्यय, चौबीस घंटे दल का कार्य करने वालों को सत्तू, चना आदि खिलाना तथा अन्य आवश्यक व्यय हेतु धन अनिवार्य था। इस हेतु कुछ दिनों तक दल ने गाँवों में डकैतियाँ डालना जारी रखा। किन्तु इससे गाँव वालों पर अत्याचार होता था। अतः रेल डकैती द्वारा सरकारी खजाने को लूटने का निश्चय किया। क्रान्तिकारी दल के सदस्यों की दशा सदैव खराब रहती थी। प्राप्त धन का एक पैसा भी कोई व्यक्तिगत कार्य में व्यय नहीं करता था।** ऐसे पूर्ण निष्ठावान् युवक ही तो अपने प्राणों की आहूति देने को सदैव तत्पर रहते थे।

रेल डकैती के लिए **सहारनपुर-लखनऊ रेल मार्ग** चुना गया। काकोरी लखनऊ से लगभग 14 किमी. दूर रेलवे स्टेशन है। दल की योजना के अनुसार **9 अगस्त 1925** का दिन इस कार्य हेतु तय हुआ।

निर्धारित दिवस को क्रान्तिकारी दल के मध्य, जिनकी परस्पर दूरी 8 किमी. है, ट्रेन की जंजीर खींच कर रोका गया। रेल यात्रियों को किसी प्रकार की हानि न हो इसके सख्त निर्देश थे। **सरकारी कोष लूटकर दल का कार्य आगे बढ़ाया गया।** डकैती के बाद ब्रिटिश सरकार बहुत सतर्क हो गयी। 26 सितम्बर 1925 को बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुईं....राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी भी पकड़े गये तथा उन पर मुकदमा चलाया गया।

राजेन्द्रनाथ अपने दल के साथियों का अधिक से अधिक विश्वास अतिशीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते थे। वे इसमें सफल भी हुए। **दल में जब तय हुआ कि बन्दूक-पिस्तौलों से काम न चलेगा तो राजेन्द्र को बम बनाना सीखने हेतु कलकत्ता भेजा गया।**

कुछ समय बाद दक्षिणेश्वर में एक मकान में बम बनाने के कारखाने सहित राजेन्द्र लाहिड़ी व उनके कई साथी पकड़े गये व इस मुकद्दमे में उन्हें **दस वर्ष की सजा सुना कर दण्डित कैदी के रूप में लखनऊ भेज दिया गया।** यहाँ उन्हें **काकोरी षड्यन्त्र** का अभियुक्त बना दिया गया।

जेल में भी राजेन्द्र लाहिड़ी व उनके साथी चैन से नहीं बैठे। जेल में उन्होंने अपने अधिकारों की माँग की लड़ाई जारी रखी। यद्यपि राजेन्द्र स्क्राफूला रोग से पीड़ित थे फिर भी डाक्टरों के मना करने के बावजूद अनशन में भाग लेते रहे। **लखनऊ जेल की कोठरियाँ उन दिनों ''दम घोटू'' कोठरियाँ थीं।**......कुछ दिनों बाद **अभियुक्तों की नाक में रबड़ की नली डालकर दूध पिलाया जाने लगा।**....ब्रिटिश शासन ने इन राजनैतिक कैदियों को गोरे कैदियों के बराबर दर्जा दिया तो, परन्तु बाद में जाकर यह भी ब्रिटिश शासन की कूटनीति सिद्ध हुई।

राजेन्द्र लाहिड़ी बहुत कुछ नास्तिक विचारों के थे। **शचीन्द्रनाथ सान्याल**, जिन्हें राजेन्द्र अपना गुरु मानते थे, के द्वारा समझाने पर व उनके द्वारा **स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द का साहित्य अध्ययनार्थ देने का प्रभाव हुआ कि राजेन्द्र अनीश्वरवादी से ईश्वरवादी बन गये।**

अनशन के बाद जेल के कैदियों को खाने-पीने की वस्तुओं में दवा मिला कर देने व उन्हें बेहोश करके जेल से बच भागने का कार्यक्रम बना पर इसमें सफलता न मिली। **जब 6 अप्रैल 1927 को**

(शेष पृष्ठ-25 पर)

25 दिसम्बर है जयन्ती जिनकी....

पण्डित मदनमोहन मालवीय

–रविचन्द्र गुप्ता

पण्डित मदनमोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को इलाहाबाद(उत्तर प्रदेश) के अहियापुरा में हुआ था। अब यह मोहल्ला मालवीयनगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। **मालवीय जी को बचपन में कविता का बड़ा शौक था। उन्होंने 15,16 वर्ष की आयु में ही कवि 'मकरन्द' नाम से ख्याति प्राप्त कर ली थी।.....**

कांग्रेस के 1886 में कलकत्ता अधिवेशन में मालवीय जी प्रथम बार राजनैतिक मंच पर पधारे थे। इसके बाद जीवनपर्यन्त कांग्रेस से जुड़े रहे। **13 अप्रैल, 1919 को 'जलियाँवाला बाग नरसंहार' पर उन्होंने केन्द्रीय धारा सभा में लगातार छः घंटे तक ओजस्वी वाणी में ब्रिटिश क्रूरता के विरुद्ध आवाज उठाई।** कांग्रेस द्वारा संचालित आन्दोलनों में उन्होंने जेल यात्रा की। **कई बार उन्होंने कांग्रेस के निर्णयों का खुलकर विरोध किया, लेकिन फिर भी कांग्रेस में वह सम्मानित एवं एक प्रतिष्ठित स्थान रखते थे।**

हिन्दुत्ववादी होने के कारण हिन्दू महासभा में भी उनका बड़ा सम्मान था। **पं. मदनमोहन मालवीय जी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' है। उन्होंने इसकी स्थापना 4 फरवरी 1916 को की थी।** 1919 से 1946 तक जीवन पर्यन्त वे इसके कुलपति रहे।

मालवीय जी की पत्रकारिता जगत में गहरी पैठ थी। उन्होंने 1907 में **'अभ्युदय'** साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया। जिसे बाद में दैनिक कर दिया गया। 1910 में **'मर्यादा'** मासिक पत्रिका भी आरम्भ की। **किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु 1921 में 'किसान' पत्र निकाला। अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' की स्थापना भी मालवीय जी ने ही की थी।** वह 1924 से लेकर जीवन पर्यन्त **'हिन्दुस्तान टाइम्स' के निदेशक मंडल के प्रतिष्ठित सदस्य रहे।** नौवाखाली में हिन्दुओं का भयंकर रक्त-पात हुआ। **इस रक्त-पात से उन्हें बड़ा मानसिक आघात लगा।** इस आघात को वह सह न सके। 1946 में उन्होंने अपनी अन्तिम श्वाँस ले ली।

–न्यू मार्केट, नई सड़क, दिल्ली ❑❑❑

(पृष्ठ-24 का शेष)

उन्हें काकोरी काण्ड के मुदद्दमे में फाँसी की सजा सुनाई गयी तो राजेन्द्र के मुख पर मुस्कान थिरक उठी। उनका विचार था कि उनकी स्वयं की परेशानी तो शीघ्र (फाँसी के बाद) समाप्त हो जायेगी.....**किन्तु उन साथियों का क्या होगा जिन्हें बीस-बीस वर्ष तक जेल में यातनाएँ झेलनी होंगी। .....**

फाँसी की सजा सुनने के बाद राजेन्द्र व उनके साथियों ने राष्ट्रभक्ति के गीत गुनगुनाये।

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी के साथ जिन साथियों ने काकोरी डकैती काण्ड में भाग लिया, उनमें श्री मन्मथनाथ गुप्त भी एक थे। श्री मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार-

''राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी बहुत ही मीठे स्वभाव के नौजवान थे। उनका चेहरा इतना कोमल था कि उसमें करीब-करीब एक लड़की की तरह कोमलता थी। इसके अतिरिक्त उनके चेहरे पर सदा हँसी छायी रहती थी। उन्हें प्रथम दृष्टि से देखने पर ऐसा ज्ञात होता था कि जीवन की आनन्ददायक वस्तुओं के लिए पैदा हुए हैं। पर उनकी आँखों में कोई ऐसा तत्व था- एक दृढ़ निश्चय- जिसके कारण वे दूसरी गम्भीर वस्तुओं के लिए उत्पन्न ज्ञात होते थे।

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी जैसे अनेक नवयुवकों ने, अल्पायु में ही भारतमाता की पराधीनता की बेड़ियों को काटने के प्रयास में अपने प्राणों की आहुति दी। आज उनके नाम पर न कोई स्मारक है और न कोई कीर्ति स्तम्भ। न पाठ्य पुस्तकों में उन्हें स्थान मिला है, जिससे वर्तमान पीढ़ी उनके अनोखे बलिदान को समक्ष रख कर राष्ट्र रक्षा में प्रवृत्त हो सके।

अपने प्राणों तक का बलिदान करने वालों को आज जीने-मरने के दिन भी स्मरण नहीं किया जाता-यह देश का दुर्भाग्य ही है।.......

शहीदों की चिताओं पर न दीपक है न हैं मेले।
वतन पर मिटने वालों का नहीं नामों निशाँ कोई।।

❑❑❑

परिचय

—अटल बिहारी वाजपेयी

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन,
रग-रग हिन्दू, मेरा परिचय!

(1)
मैं शंकर का वह क्रोधानल
कर सकता जगती क्षार-क्षार,
डमरू की वह प्रलय-ध्वनि हूं
जिस में नचता भीषण संहार;
रण-चण्डी की अतृप्त प्यास,
मैं दुर्गा का उन्मत्त हास,
मैं यम की प्रलयंकर पुकार,
जलते मरघट का धुआंधार;
फिर अंतरतम की ज्वाला से
जगती में आग लगा दूं मैं—
यदि धधक उठे जल-थल अंबर
जड़-चेतन फिर कैसा विस्मय?

(2)
मैं आदि पुरुष, निर्भयता का
वरदान लिए आया भू पर,
पय पीकर सब, मरते आए
मैं अमर हुआ लो विष पीकर,
अधरों की प्यास बुझाई है
मैंने पीकर वह आग प्रखर,
हो जाती दुनिया भस्मसात्
हा जिसको क्षण भर ही छूकर,
भय से आकुल फिर दुनिया ने
प्रारम्भ किया मेरा पूजन—
मैं नर-नारायण-नीलकंठ
बन गया न इसमें कुछ संशय!

(3)
मैं अखिल विश्व का गुरु-महान,
देता विद्या का अमर दान,
मैंने दिखलाया मुक्ति-मार्ग,
मैंने सिखलाया ब्रह्मज्ञान,
मेरे वेदों का ज्ञान अमर,
मेरे वेदों की ज्योति प्रखर,
जगती के मन का अंधकार
कब क्षण भर को भी सका ठहर?
मेरा स्वर नभ में घहर-घहर
सागर के जल में छहर-छहर
इस कोने से उस कोने तक
कर सकता जगती सौरभमय!

(4)
दुनिया के वीराने पथ पर
जब-जब नर ने खाई ठोकर,
दो आंसू शेष बचा पाया
जब-जब मानव सब कुछ खोकर;
मैं आया तभी द्रवित होकर,
मैं आया ज्ञान-दीप लेकर,
भूला-भटका मानव पथ पर,
चल निकला सोते से जग कर।
जग के आवर्तों में फंस कर
जो बैठ गया आधे पथ पर—
उस नर को राह दिखाना ही
मेरा सदैव का दृढ़ निश्चय!

(5)
मैं तेजपुंज, तमलीन जगत में
फैलाया मैंने प्रकाश,
मैंने जग का विनाश रचकर
कब-कब चाहा निज का विकास?
शरणागत की रक्षा की है
मैंने अपना जीवन दे कर,
विश्वास नहीं यदि आता हो
तो साक्षी है इतिहास अमर
यदि आज देहली के खण्डहर,
सदियों की निद्रा से जग कर,
गुंजार उठें ऊंचे स्वर से—
'हिन्दू की जय' तो क्या विस्मय?

(6)
होकर स्वतन्त्र मैंने कब चाहा
है कर लूं जग को गुलाम?
मैंने तो सदा सिखाया है
करना अपने मन को गुलाम;
गोपाल-राम के नामों पर
कब मैंने अत्याचार किया?
कब दुनिया को हिन्दू करने
घर-घर में नर संहार किया?
कोई बतलाए काबुल में
जाकर कितनी मस्जिद तोड़ीं?
भू-भाग नहीं, शत-शत मानव के
हृदय जीतने का निश्चय!

(7)
मैंने छाती का रक्त पिला
पाले विदेश के क्षुधित लाल,
मुझ को मानव में भेद नहीं
मेरा अंतस्तल वर विशाल;
जग के ठुकराए लोगों को
लो मेरे घर का खुला द्वार,
अपना सब कुछ मैं लुटा चुका
फिर भी आए हैं धनागार।
मेरा हीरा पाकर ज्योतित
उन लोगों का वह राजमुकुट—
फिर इन चरणों पर झुक जाए
कल वह किरीट तो क्या विस्मय?

(8)
मैं वीर-पुत्र, मेरी जननी के
जगती मैं जौहर अपार,
अकबर के पुत्रों से पूछो
क्या याद उन्हें मीना-बाजार;
क्या याद उन्हें चित्तौड़ दुर्ग
में जलने वाली आग प्रखर,
जब हाय! सहस्रों माताएँ
तिल-तिल मर कर हो गई अमर,
वह बुझने वाली आग नहीं,
रग-रग में उसे सजाए हैं—
यदि कभी अचानक फूट पड़े
विप्लव लेकर तो क्या विस्मय?

(9)
मैं एक बिन्दु, परिपूर्ण सिंधु
है यह मेरा हिन्दू समाज,
मेरा इसका सम्बन्ध अमर
मैं व्यक्ति और यह है समाज;
इससे मैंने पाया जीवन,
मुझ को केवल अधिकार यही,
कर दूं सब कुछ इसके अर्पण,
मैं तो समाज की थाती हूं
मैं तो समाज का हूं गुलाम—
मैं तो समष्टि के लिए व्यष्टि का
कर सकता बलिदान अभय!

कालजयी जनप्रिय राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी

–सूर्यप्रकाश सेमवाल

भारतीय समाज राजनीतिक में जीवन के लगभग 6 दशक लगाने वाले तीन बार देश के प्रधानमंत्री रहे भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी से कौन परिचित नहीं होगा?? पं. जवाहरलाल नेहरु ने जिस नवयुवक को देश का प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी 60 के दशक में ही कर दी थी, **देश की सबसे शक्तिशाली महिला इंदिरा गांधी विपक्ष में जिस व्यक्ति विशेष की प्रतिभा की कायल रहीं** और स्व. राजीव गांधी के बाद आए सभी प्रधानमंत्री विपक्षी होने के बाद भी जिस व्यक्तित्व के मुरीद रहे उसका नाम अटल बिहारी वाजपेयी है। **अटल बिहारी वाजपेयी विपक्ष में भी रहकर सबके आत्मीय रहे हैं।** बहुआयामी प्रतिभा के धनी वाजपेयी एक **श्रेष्ठ वक्ता, शीर्ष कवि और प्रभावी विदेश मन्त्री व प्रधानमन्त्री सिद्ध हुए।**

25 दिसम्बर 1924 को एक साधारण शिक्षक पं. कृष्ण बिहारी वाजपेयी और श्रीमती कृष्णा देवी के घर ग्वालियर में जन्मे, अटल के दादा पं. श्यामलाल वाजपेयी उत्तर प्रदेश में आगरा स्थित बटेसर गांव के मूल निवासी थे....जो मुरैना, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में बस गए थे।

अटल के पिता कृष्ण बिहारी मिश्र एक शिक्षक व कवि थे। बालक अटल की प्रारम्भिक शिक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोरखी, बाड़ा, ग्वालियर में हुई। इसके पश्चात उन्होंने ग्वालियर विक्टोरिया कॉलेज से हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत में डिस्टिंक्सन लेकर स्नातक पास किया। उसके बाद दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज कानपुर से राजनीतिक शास्त्र विषय में उन्होंने प्रथम श्रेणी से एम.ए. उत्तीर्ण किया।

1939 में बाबा साहब आप्टे की प्रेरणा से किशोरावस्था में ही अटल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए साथ ही कवि रूप में अपनी मंडली में चर्चित होने लगे थे। और **ग्वालियर में आर्यसमाज की युवा इकाई आर्य कुमार सभा से जुड़कर 1944 में इसके महासचिव बने।....**

इससे पूर्व अटल जी अगस्त **1942 में भारत छोड़ो आंदोलन** में जुड़े और इस दौरान अपने बड़े भाई प्रेम वाजपेयी के साथ 23 दिन तक अंग्रेजों की जेल में रहे। वहां किशोर क्रान्तिकारी को इस लिखित हलफनामे के बाद छोड़ा गया कि भविष्य में ब्रिटिश सरकार के विरोध में मुखर नहीं होंगे। 1940 से 1944 के बीच ही संघ के प्रशिक्षण शिविर (ओटीसी) कर **1947 में अटल जी पूर्णकालिक प्रचारक बन गए थे।**

इसी दौरान उन्होंने **एल.एल.बी.** में प्रवेश लिया लेकिन विभाजन के दर्द ने उनमें समाज के बीच ठोस कार्य करने की ललक बढ़ा दी। प्रबुद्ध युवा स्वयंसेवक अटल को संघ अधिकारियों ने उत्तर प्रदेश में विस्तारक के नेता राष्ट्र सेवा के कार्य में लगा दिया। यहीं से कुशल संगठनकर्ता **आप्टे जी ने प्रतिभाशाली अटल जी को पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे परिपक्व युवा चिन्तक के साथ राष्ट्रधर्म के संपादन से जोड़ा।.....**

इसी पत्रकारिता यात्रा में अटल जी ने **पाञ्चजन्य साप्ताहिक, स्वदेश और वीर अर्जुन में संपादक की भूमिका** निभाई। **संघ के व्रती स्वयंसेवक और पूर्णकालिक प्रचारकों की तरह अटल जी ने अपनी गृहस्थी जीवनभर नहीं बसाई।**

1951 में अटल बिहारी वाजपेयी की कुशल वक्तृत्व कला, प्रभावी कवि व्यक्तित्व व समाज के जन-जन से जुड़ी संवेदना आदि गुणों के चलते संगठन के शीर्ष नेतृत्व ने पं. दीनदयाल उपध्याय के साथ संस्थापक सदस्य के रूप में भारत में जनसंघ के विस्तार कार्य में लगाया। यहीं से भारतीय राजनीति में दक्षिण पंथ की प्रभावी भूमिका की नींव पड़नी शुरू हुई।

अटल जी को जनसंघ का राष्ट्रीय महामंत्री बनाया गया। पं. दीनदयाल उपाध्याय के वैचारिक व दार्शनिक सहयात्री रहने वाले अटल को, राजनीति का ककहरा व विरासत **डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी** से मिली।

1954 में अटल बिहारी वाजपेयी डॉ. मुखर्जी के कश्मीर में प्रवेश के लिए आमरण अनशन आंदोलन में उनके अनन्य सहयोगी रहे।

गैर-कश्मीर निवासी भारतीयों के लिए प्रवेश की पाबंदी का ऐतिहासिक विरोध करने वाले इस आंदोलन में डॉ. मुखर्जी को जो अमानवीय यातनाएं दी गईं, उस पीड़ा व दंश को भोगा और झेला तो डॉ. मुखर्जी ने, जहां उनकी मौत हो गई थी लेकिन**....देशतोड़क विभाजक राजनीतिक को निकट से देखने वाले वाजपेयी इससे आंतरिक रूप से भी मजबूत हुए और राजनीति दृष्टि से परिपक्व बनकर उनकी विरासत के सुपात्र सिद्ध हुए।**

1957 के लोकसभा चुनावों में लखनऊ, मथुरा व

बलरामपुर एक साथ तीन जगह से चुनाव लड़ने वाले वाजपेयी जनसंघ के टिकट पर बलरामपुर से जीतकर पहली बार लोकसभा में पहुंचे। इसी दौर में **तत्कालीन प्रधानमंत्री ने कहा था कि एक न एक दिन वाजपेयी इस देश के प्रधानमंत्री बनेंगे**। पं. दीनदयाल उपाध्याय के उपरान्त अटल जी जनसंघ का चेहरा बन गए।.... **1968 में जनसंघ का अध्यक्ष बनकर उन्होंने नानाजी देशमुख, बलराज मधोक और लालकृष्ण आडवाणी के साथ जनसंघ का विस्तार किया।** 1968 से लेकर 1973 तक वाजपेयी ज़नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे।

1975 से 1977 तक आपातकालीन में अन्य विपक्षी नेताओं के साथ प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हें भी जेल में बंद रखा। जयप्रकाश नारायण द्वारा समूचे विपक्ष को कांग्रेस के विरोध में एकजुट करने के अभियान को ताकत देते हुए 1977 के चुनावों में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में जनसंघ बड़े नवगठित संयुक्त दल-जनता पार्टी का हिस्सा बन गया।

1977 में पहली गैर-कांग्रेसी जनता पार्टी सरकार में अटल जी विदेश मंत्री रहे और संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी भाषा का उद्घोष करने के साथ ही वे हर मोर्चे पर सफल सिद्ध हुए और भारत वर्ष में लोकप्रिय और चर्चित बौद्धिक राजनेता विश्व मंच पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहे। **1979 में जनता पार्टी सरकार के पतन तक अटल बिहारी वाजपेयी एक स्थापित राष्ट्रीय नेता बन चुके थे।**

1980 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े शीर्ष प्रचारकों और अपने सहयोगियों लालकृष्ण आडवाणी, भैरों सिंह शेखावत व डा. मुरली मनोहर जोशी आदि के साथ अटल बिहारी वाजपेयी ने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की और वह **भाजपा के पहले संस्थापक अध्यक्ष 1986 तक बने रहे।** इसके बाद तो अटल भाजपा के पर्याय बन गए। पहले राज्यों में और फिर केन्द्र में भाजपा की सरकार बनीं। अटल जी मई 1996 में 13 दिन के लिए पहली बार, 1998-99 में 13 महीने के लिए दूसरी बार और फिर तीसरी बार 1999 से 2004 तक पूरे कार्यकाल के लिए देश के प्रधानमंत्री बने।

देश की संसद के अंदर सर्वश्रेष्ठ सांसद, विपक्षियों के बीच भी भरपूर सम्मान पाने वाला अटल जी जहां **9 बार लोकसभा के सदस्य** रहे वहीं दो बार राज्यसभा में रहकर उन्होंने समाज व देश से जुड़े किसी भी ज्वलंत मुद्दे को नहीं छोड़ा, वे समाधान भी देते रहे। पाकिस्तान समेत पूरे विश्व के साथ कूटनीति का मामला हो अथवा **अमरीका के दबाव से न झुककर 1998 में पोखरण परमाणु परीक्षण का ऐतिहासिक निर्णय अथवा देश के राष्ट्रीय राजमार्गों का कायाकल्प, ये सब अटल जी की उपलिब्धयां हैं।**

वर्ष 2006 में स्वास्थ्य कारणों से राजनीति से संन्यास लेने वाले भारत रत्न अटल जी **जीवन की संध्या बेला में भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह के रूप में शैय्या पर लेटे देश के अच्छे दिनों के स्वप्न को साकार होते देखने के साक्षी हैं।**....अटल जी जैसी लोकप्रियता, सादगी, स्वच्छ छवि, सर्वस्वीकार्यता और समाज व देश के प्रति प्रतिबद्धता यदि पार्टी लाइन से हटकर सभी राजनेताओं में हो तो फिर क्या कहने। **परमात्मा भारतीय राजनीति के कालजय लोकप्रिय नेता, श्रेष्ठ कवि, कुशल वक्ता व उदारमना व्यक्तित्व को अच्छा स्वास्थ्य दें, यही कामना जन-जन की है।**

-(पंजाब केसरी से साभार) ●●●

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के पास) चर्च के सामने, नई दिल्ली-110005

फोन नं. : 011-23553624, 011-23551344, मो. 09213527666

Website : www.hindisahityasadan.com

E-mail : hindisahityasadan@gmail.com

किशोरों के लिए ज्ञानवर्धक रोचक, प्रकाशन

महर्षि दयानन्द	गुरुदत्त	रु 30
श्रीराम	गुरुदत्त	रु 60
श्री कृष्ण	गुरुदत्त	रु 30
जगत की रचना	गुरुदत्त	रु 30
महाभारत	गुरुदत्त	रु 60
द्वितीय विश्व युद्ध हिटलर की कहानी	गुरुदत्त	रु 30
धर्मवीर हकीकत राय	गुरुदत्त	रु 40
वीर पूजा (क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के जीवन पर)	गुरुदत्त	रु 50
डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी अन्तिम यात्रा	गुरुदत्त	रु 30
डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी अन्तिम यात्रा	शिवकुमार गोयल	रु 50
स्वामी विवेकानन्द	शिवकुमार गोयल	रु 30
अमर सेनानी सावरकर	शिवकुमार गोयल	रु 50

वीर सावरकर की रचनाएं

क्रान्ति के नक्षत्र	रु 80
हिन्दुत्व	रु 40
गोमांतक	रु 40
प्रतिशोध	रु 40

पेनांग द्वीप का एक संस्मरण

–भाई परमानन्द

पाञ्चजन्य ने सन् 1968 में क्रान्तिकारियों पर केन्द्रित चार विशेषांकों की शृंखला प्रकाशित की थी। दिवंगत श्री वचनेश त्रिपाठी के संपादन में निकले इन अंकों में देशभर के क्रान्तिकारियों की शौर्यगाथाएं थीं। पाञ्चजन्य पाठकों के लिए इन क्रान्तिकारियों की शौर्यगाथाओं को नियमित रूप से प्रकाशित कर रहा है। प्रस्तुत है 29 अप्रैल, 1968 के अंक में प्रकाशित शहीद क्रान्तिकारियों के साथी रहे पं. परमानन्द का आलेख–

नवम्बर 1941.... सिंगापुर में अंग्रेजों का विनाश करके भारतीय झण्डा फहराकर हम तोशामारू जहाज से भारत की ओर चले। अभी पेनांग द्वीप तक ही पहुंचे थे कि वहां स्थित गवर्नर ने हमें कैद कर लिया। हुआ ऐसा कि हम **तीन हजार भारतीयों ने अंग्रेजों को सशस्त्र युद्ध में परास्त पराजित करने की जो धृष्टता की उससे ब्रिटिश अफसर काफी सतर्क हो गए।** उन्हें पता चल गया कि **300 भारतीय विद्रोही** सिंगापुर से स्वदेश को वापस जा रहे हैं। **चार-पांच जहाजों ने पिनांग के पास हमें घेर लिया** और हमारा जहाज आगे बढ़ने से रोक दिया गया।

पिनांग के सुंदर द्वीप में हमारा अनमोल जीवन संकट में पड़ गया। **हम अब जीवित लौटने की आशा त्याग चुके थे।** अपने मरने की सभी को फिक्र न थी। सवाल था आजादी का सपना साकार करने का!!....इस गम्भीर परिस्थिति का सामना करने के लिए रास्ते में बार काउंसिल युद्ध समिति की एक बैठक की गई–**उक्त बैठक में पं. जगतराम जी उपस्थित थे।**

जहाज पर से ही हम सबने ताक-झांक लगाकर देखा तो दूर पर एक गुरुद्वारा चमकता हुआ दिखाई पड़ा। **बार कांउसिल में यह तय किया गया कि हमें सबसे पहले यहां का वातावरण क्या है, इस बात का पता लगाना चाहिए।**

हमने कैप्टन से कहा कि हमें लाइफ बोट में बिठाकर किनारे पर छोड़ दें। तो हम गुरुद्वारे तक हो आएं। हुआ ऐसा ही।....गुरुद्वारे पहुंचे और मत्था टेककर बैठ गए। आधा घंटा तक वहां बैठे-बैठे कुछ सिख सैनिकों से बातचीत करके हम पुनः अपने जहाज में वापस चले गए।

रण ठानने का निश्चय

हम पहले तो यह कोशिश करते रहे कि हमारे जहाज को आगे बढ़ाने की अनुमति मिल जाए लेकिन गवर्नर अपनी जिद पर था। उसने स्पष्ट शब्दों में इनकार कर दिया। **अंततोगत्वा हम इस निर्णय पर पहुंचे कि जो कुछ सिंगापुर में हुआ वही यहां भी किया जाए। बेसहारा, मजबूर होकर कैद में मरने से तो अच्छा है कि लड़ते-लड़ते सम्मान के साथ मृत्यु का वरण किया जाए।**....इस योजना की पूर्ति के लिए तीन-चार टोलियां बनाई गईं। एक टोली टेलीफोन एक्सचेंज, दूसरी कोतवाली, तीसरी वायरलेस स्टेशन की ओर भेजी गई कि वे इन सबका पता लगाकर सारी व्यवस्था ठीक रखें कि आवश्यकता पड़ने पर इन पर अपना अधिकार किया जा सके। **मुझे आदेश हुआ कि मैं यहां के किले का निरीक्षण करके संपूर्ण स्थिति का पता लगाऊं।**

जब अपना नाम सुना

स्थिति अत्यंत ही गंभीर हो गई थी। चारों ओर सैनिकों का पहरा था। **संदेह मात्र पर हम उनकी गोली का निशाना बन सकते थे।** हम इस विकट परिस्थिति में किले के पास तक डेढ़ मील आगे बढ़ गए। एक मोड़ पर हम जैसे ही मुड़ने लगे तो किले के द्वार से एक कमांडर बाहर आया। संतरी ने उसे सैलूट किया और इसी समय मैंने अपने दूसरे साथी रोड़ासिंह को पास आने का संकेत दिया।

हम दो-तीन कदम आगे बढ़े होंगे कि पीछे से आवाज आई–"भाई साहब, परमानन्द जी, खड़े रहो ना।" मैं ही नहीं यह सुनकर मेरे रोंगटे भी खड़े हो गए।....

एक गंभीर आशंका से मैं उसकी ओर मुड़कर खड़ा हो गया। लेकिन जो कुछ हुआ वह अविस्मरणीय और अप्रत्याशित था। **वह हमारे पास आया और बड़े प्यार से बोला चलो किले के अंदर चलें।**

यह मेरे लिए ईश्वरीय वरदान था। मैं तो उसे देखने आया ही था। उसके पीछे-पीछे हो लिया। **अंदर पहुंचे –बड़े सत्कार के साथ बिठाकर नौकर को आवाज दी। जल्दी आओ-मेरे गुरु आए हैं। सामान लाओ, आज मैं अपने हाथों से चाय बनाकर इन्हें पिलाऊंगा।**

जब हम चाय आदि पी चुके तो वह बोला–आप अब हमें बताएं कि हम क्या करें? **बजबज में बाबा गुरुदत्त के 28 साथी मार दिए गए हैं। गुरुजी! आपने जो कुछ सिंगापुर में किया था, वही यहां भी**

क्यों नहीं करते??....

सब कुछ समर्पित

मैं उसकी ओर मौन देखता रहा। फिर बोला—**लेकिन यहां हमारे पास साधन क्या है?**

यह उछल पड़ा—बोला-पेट्रोल, एक लाख टन बारूद-**छह महीने तक 10 हजार सिपाही इसके सहारे निरंतर युद्ध कर सकते हैं।.....**

लेकिन क्या तुम इस प्रकार हमारी सहायता कर सकोगे? मेरे यह पूछने पर वह बोला नहीं—**जेब से स्टोर की चाभी निकाल कर हमारी ओर बढ़ाते हुए बोला—यह लीजिए सब कुछ आप को समर्पित है।**

मैंने कहा—इंदरसिंह (उस सूबेदार मेजर का यही नाम था) **भावुकता में बहने से काम नहीं चलेगा।** यह एक गंभीर काम है। इस संबंध की वास्तविकताओं पर भी निगाह रखनी पड़ेगी हमारा लक्ष्य क्या है इस बात का भी ध्यान रखना होगा।....

यह मत भूलो कि.....हमारा यह संघर्ष इसलिए है कि हमें ब्रिटिश सत्ता को भारत से उखाड़ फेंकना है।

पहले यह बताओ कि हम कैसे छूटेंगे—**हमें भारत जाने कर कोई राह चाहिए।** वह बोला लेकिन भाई साहब! गवर्नर बड़ा पाजी है। वह ऐसे मानने वाला नहीं है। उसके पास तक पहुंचना भी मुश्किल है।....

एक रास्ता है।....कल मैं अपना एक हवलदार उसकी सेवा के लिए भेजूंगा। **आप अपना प्रार्थनापत्र लेकर गवर्नर के पास जाएं।** वह संतरी आपको बिना रोक-टोक के उसके पास जाने देगा।

गवर्नर से सामना

हुआ यही।...हम 28 साथी अपने प्रार्थना पत्र लेकर और पिस्तौलें भरकर गवर्नर के निवास पर पहुंचे। **दरवाजे पर खड़े संतरी ने थोड़ी-बहुत पूछताछ की—हमारे यह बताने पर कि हम अपना प्रार्थना पत्र गवर्नर को देना चाहते हैं, उसने अंदर जाने की अनुमति दे दी।**

हम 26 लोग अंदर घुस गए। दो को दरवाजे पर ही रहने का इशारा किया। **26 लोगों के जूतों की आवाज सुनकर गवर्नर आग बबूला हो गया।** वह बड़बड़ाता हुआ बाहर निकला।

गालियों के साथ ही क्रोधाग्नि भी बरस रही थी। **वह बोला—हम तुम्हें एक कदम भी आगे न बढ़ने देगा।** तुम सब वापस जाओ। इस पर हमारा एक पठान साथी भड़क उठा। उसने बाहें समेट लीं और पिस्तौल निकाल कर बोला—तो ठीक है आप इसका अंजाम भोगने के लिए तैयार हो जाए। **अब तो भारत जाएंगे, हमें कोई भी नहीं रोक सकता।**

गोली की भाषा का परिणाम

इस साहस का परिणाम यह हुआ कि गवर्नर एकदम ढीला पड़ गया। उसका गुस्सा काफूर हो गया। बोला ओ! तुम कुछ नहीं समझा। **क्या हिन्दुस्तानियों की जिंदगी बचाना हमारा काम नहीं। हम तुम्हें मरने से बचाना चाहता है।** तुम्हारी जहाज को जर्मन डुबा देगा इसलिए तुम्हें रोका है। अगर तुम यह खतरा लेना चाहता है तो जाओ, हम तुम्हें नहीं रोकेगा।.....हमने एक स्वर से कहा कि—**हम भारत जाना चाहते हैं।**

वाह री गोली की भाषा! वरदायिनी देवी!

वह बड़ी ही नम्रता से बोला—तो तुम्हें क्या-क्या सामान चाहिए। किसी चीज की कमी हो तो भेज दूं। और फिर हमारे कहने पर **उसने 7 बोरे आटा, एक बोरा शक्कर, 4 टीन घी भेज दिया और साथ ही यह आदेश भी दिया कि आई एलाऊ यू टू पास आन** (मैं तुम्हें आगे जाने की अनुमति देता हूं)।

हम वहां से वापस चले आए और फिर हमारा जहाज पिनांग से कलकत्ता की ओर रवाना हो गया। लेकिन खतरा अभी भी बाकी था। **कलकत्ते में हमें गिरफ्तार करने की योजना थी।** एक विशेष गाड़ी से हम कलकत्ते से लाहौर जाने वाले थे। हम सब गाड़ी में बैठ गए थे कि हमारे एक साथी ने कहा—**भाई जी जाना चाहो तो चले जाओ। मौका अच्छा है।**

मैंने भी अवसर देखकर हाथ में एक बाल्टी लेकर उसी गाड़ी से उतर रहे कुलियों का साथ कर लिया। उनके पीछे-पीछे स्टेशन के दरवाजे तक आया। वहां खड़े बाबू ने पूछा तुम कौन है? क्या महाराज हैं?

मैंने कहा—**जी हां। मैं रंगून में एक साहब का रसोइया था उसने हुक्म दिया कि इन सबको स्टेशन से बाहर निकाल दो।** और फिर मैं कुछ ही मिनटों के बाद स्टेशन से बाहर हो गया।

तांगा करके आगे बढ़ा तो विचार आया कि इस प्रकार तांगे पर चलना तो खतरे से खाली नहीं है। अत: **मैं तांगे से कूद पड़ा और कलकत्ते की सड़कों पर उमड़ रहे विशाल जनसागर में विलीन हो गया।**

कलकत्ता में मैं कई दिनों तक रहा, कई विप्लवी नेताओं से मिला। कभी-कभी पिनांग की यह घटना याद करता हूं तो आज की स्थिति में अजीब-सा लगता है।

●●●

मुंशी प्रेमचन्द ने भी लताड़ा था मुस्लिम कट्टरवाद को

—शिवकुमार गोयल

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हिन्दू-मुस्लिम एकता के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने अपने उपन्यासों व कहानियों में सदैव सामाजिक एकता को पुष्ट करने वाली भावनाओं को उजागर किया था। इसके बावजूद अनेक बार **उन्हें इस्लामी कट्टरवादियों का कोपभाजन बनने को मजबूर होना पडा था।**

एक बार **'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'** में असम में बंगलादेशी मुसलमानों की घुसपैठ का भण्डाफोड़ करने वाले मेरे एक लेख पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए **मुंशी प्रेमचन्द के साहित्यकार पुत्र श्री अमृतराय ने मत व्यक्त किया था कि इस्लामी कट्टरवाद न केवल भारत अपितु विश्वव्यापी समस्या बनती जा रही है।** इस्लामी कट्टरता सम्बन्धी मेरे एक अन्य लेख को पढ़कर उन्होंने मुझे मुंशी प्रेमचन्द जी का एक ऐतिहासिक पत्र भेज था। जिसमें उनके मुस्लिम कट्टरवाद से आहत हृदय की पीड़ा का दिग्दर्शन होता है।

मुंशी जी ने किसी समय **हजरत इमाम हुसैन** की शहादत से प्रभावित होकर **'कर्बला' नाटक** लिखा था। उन्होंने इसमें ऐतिहासिक तथ्य दिया था कि **कर्बला की लड़ाई में कुछ हिन्दू योद्धाओं ने भी हजरत हुसैन के पक्ष में युद्ध कर प्राणोत्सर्ग किया था। कट्टरवादियों को यह नहीं पचा कि कोई हिन्दू लेखक 'कर्बला' पर कलम उठाये।**....उन्होंने मुंशीजी के विरुद्ध हंगामा मचाना शुरू कर दिया। कर्बला नाटक के बहिष्कार का फतवा दिया गया।

मुंशी जी ने 'कर्बला' का प्रकाशन करने वाले को पत्र में लिखा:- **'बेहतर है 'कर्बला' न निकालिए। मेरा कोई नुकसान नहीं है। न में मुफ्त का खलजान (झन्झट) सर पर लेने को तैयार हूं।** मैंने हजरत हुसैन का हाल पढ़ा, उनसे अकीदत (श्रद्धा) हुई, उनकी शहादत ने शफत (मोहित) कर लिया। उसका नतीजा यह ड्रामा था। **अगर मुसलमानों को यह भी मंजूर नहीं है कि किसी हिन्दू की जबान व कलम से उनके किसी मजहबी पेशवा या इमाम की मदहसराई (स्तुति) भी...तो मैं उस झन्झट में पड़ने को तैयार नहीं हूं!!..**

हजरत अगर मजहबी पेशवा की मसनवी पढ़ते हैं, अफसाने पढ़ते हैं तो उन्हें इस कर्बला ड्रामा से क्यों एतराज हो? क्या इसलिए कि इसे एक हिन्दू ने लिखा है।

ख्वाजा हसन निजामी ने कृष्ण बीती लिखी। एक हिन्दू नक्काद ने उसकी तारीफ की सिर्फ इसलिए कि मौलाना ने कृष्ण से अपनी अकीदत (श्रद्धा) का इजहार किया था। मेरी भी यही मंशा थी। अगर हसन निजामी को यह आजादी हासिल है और मुझे नहीं है, तो मुझे इसका अफसोस नहीं।

यह ड्रामा (नाटक कर्बला) ऐतिहासिक है और इतिहास से यह पता चलता है कि कर्बला के संग्राम में कुछ हिन्दू योद्धाओं ने भी हजरत हुसैन का पक्ष लेकर प्राणोत्सर्ग किए थे। अतः उन पात्रों का बहिष्कार करना किसी भांति युक्ति संगत न होगा।....रही यह बात कि उनके समावेश से हिन्दू और मुसलमानों दोनों में से एक को भी प्रसन्नता न होगी। इसके लिए लेखक को क्यों कसूरवार ठहराया जाए।'

मुंशी प्रेमचन्द जी के उपरोक्त पत्र से यह स्पष्ट हो गया है कि इस्लामी कट्टरवादी लम्बे अरसे से किसी न किसी बहाने से हिन्दुओं के विरुद्ध फतवे देने, उनके विरुद्ध विषवमन कर अलगाव पैदा करने में लगे रहे हैं।

मुंशी प्रेमचन्द ने देखा कि कुछ मुल्ला-मौलवी उर्दू में हिन्दी के शब्दों के प्रयोग को भी सहन करने को तैयार नहीं हैं। तब भी उन्होंने एक लेख में उन्हें लताड़ लगाते हुए लिखा था—**मैं पूछता हूं आप हिन्दी को क्यों सहन नहीं करते?** क्या आपको मालूम है (और नहीं है तो होना चाहिए) कि **हिन्दी का सबसे पहला शायर, जिसने हिन्दी का साहित्यिक बीज बोया, वह अमीर खुसरो था।.....**

क्या आपको मालूम है, कम से कम पांच सौ मुसलमान शायरों ने हिन्दी को अपनी कविता से धनी बनाया है जिसमें चोटी के शायर हैं।

मुंशी जी ने आगे लिखा—'अगर यह मालूम होने पर भी आप हिन्दी को उर्दू से अलग समझते हैं तो आप देश के साथ बेइंसाफी करते हैं। **मुझे अपने मुस्लिम दोस्तों से यह शिकायत है कि वे हिन्दी के आमफहम शब्दों से भी परहेज करते हैं।** जीवन-भर जनवादी लेखक संघ से जुड़े-रहे मुंशी प्रेमचन्द जैसे शीर्षस्थ साहित्यकार भी अपने समय में मुल्ला-मौलवियों व इस्लामी कट्टरपंथियों के कोपभाजन बनने को मजबूर होते रहे। **गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) के एक समारोह में भी उन्होंने कहा कि 'मुस्लिम उसे ही अपना नेता मानते हैं जो हिन्दुओं को ज्यादा से ज्यादा गाली देता है** और गैर-मुस्लिमों के प्रति नफरत फैलाता है—विषवमन करता है।'......

स्वास्थ्य-चर्चा

भारत की राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति

–गिरीश त्रिवेदी

आज हम देशभर में ऐलोपेथी के अच्छे-अच्छे अस्पताल देख सकते हैं और **स्वदेशी चिकित्सा पद्धति की बड़ी दुर्दशा है। इसका कारण मात्र सरकारी इच्छा शक्ति ही है।** राजकीय तिरस्कार और उपेक्षा ने आयुर्वेद को गिराकर तेजहीन बना दिया है। इसकी साख सरकार ने ही गिराई है, वरना **आयुर्वेद सर्वोत्तम चिकित्सा पद्धति है** इसका प्रमाण है दिन दुगना रात चौगुना ख्याति पाता, विस्तार पाता आयुर्वेद संस्थान 'पतञ्जलि योग पीठ'। मैं ऐलोपेथी की भर्त्सना मात्र इसलिए नहीं कर रहा हूं क्योंकि ये आयुर्वेद के आगे निकृष्ट हैं। इस बात को हम निम्न बिन्दुओं से सिद्ध करेंगे......

1. ऐलोपेथी की दवाइयां बीमारियों को नियन्त्रित (कंट्रोल) करके रखती हैं। बीमारी को ठीक नहीं करतीं। इसके पीछे गहरा षड्यन्त्र लगता है कि यदि रोगी ठीक हो गया तो दवाई का धन्धा कम चलेगा। डॉक्टरों की आय भी कम रहेगी तो ऐसी ही दवाई खोजी जाये जो बीमार जीवन भर बीमारी को नियन्त्रण में रखने के लिए और मर-मर के जिन्दा रहने के लिए खाता ही रहे। **इससे बीमार को आजीवन काफी धन व्यय करते रहना पड़ता है।** जबकि आयुर्वेद ऐसी औषध देता है जो जड़ से बीमारी ठीक करता है। **डॉक्टरों ने ये झूठ प्रचारित कर रखा है कि अस्थमा, बी.पी., मधुमेह, अर्थरायटिस, माइग्रेन पेन आदि-आदि बीमारियां कभी ठीक होती ही नहीं।** यह सफेद झूठ है। ऐसी बीसियों बीमारियों के लाखों मरीज पतंजलि योगपीठ ने पूरी तरह ठीक कर लिये हैं जिनके पूरे प्रमाण उपलब्ध हैं। इसका सीधा अर्थ यह होता है कि ऐलोपेथी वाले अपने ज्ञानाभाव में लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। यदि वे सच में बीमार के हितैषी हैं तो उन्हें बीमार से कहना चाहिए कि भाई तुम्हारी बीमारी का इलाज हमारी चिकित्सा पद्धति में नहीं है, तुम आयुर्वेद और प्राणायाम की शरण में जाओ।

2. साइडइफेक्ट–ऐलोपेथी की कुछ एक को छोड़ के सभी इवाइयों से साइडइफेक्ट होता है। **एक बीमारी की दवा से दूसरी बीमारियां उभर आती हैं।** ऐलोपेथी में निरापद दवा मिलना मुश्किल है। डॉक्टर जानते हैं कि उनके द्वारा दी जाने वाली दवा फायदे के साथ नुकसान भी करेगी मगर वे चुप्पी साधे दवाएं देते जाते हैं। **जरूरत से ज्यादा पेनकिलर लिखते अधिकतर डॉक्टर देखे जा सकते हैं।......**

हमारी सरकार अंग्रेजीयत की इतनी दीवानी है कि **कई अत्यधिक खतरनाक दवाइयों पर जिन्हें अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस आदि देशों ने गत 20-20 वर्षों से अपने यहां रोक लगा रखी है, उन्हें हमारे यहां धड़ल्ले से बेचने दिया जा रहा है।** यहां तक कि बांग्लादेश, नेपाल, मलेशिया जैसे देश भी अपने यहां जिन खतरनाक दवाओं को बिकने, बनाने की अनुमति नहीं देते हैं वे भारत में आराम से बिकती हैं। ऐसी दवाएं लेकर **रोगी और अधिक रोगी बनता है और मरता है।....** प्रिय देशवासियो! ऐसे हालात को देखते हुए भारत में तो ऐलोपेथी से उपचार कराना और भी खतरनाक है।

3. आयुर्वेद का इतिहास लाखों वर्ष पुराना है। आयुर्वेदिक औषधियां हमारे ऋषि-मुनियों ने सघन परीक्षण करके निर्धारित की हुई हैं। ये प्राचीन औषधियां आज भी पूरी तरह प्रभावशाली हैं। कोई भी औषध असत्य सिद्ध नहीं हुई है, न ही आउट ऑफ डेट हुई है। हां ये बात अवश्य है कि **आयुर्वेद के प्राचीन खजाने में अन्वेषण करके नई औषध बनाई जा सकती है।**

जैसे रक्तचाप (बी.पी.) की बीमारी जड़ से मिटाने के लिए स्वामी रामदेव जी ने 'मुक्तावटी' बनाई। यह प्रयोग पुराने को असत्य सिद्ध नहीं करता बल्कि और गौरवान्वित करता है। **ऐलोपेथी में आये दिन नई-नई दवाइयां आती हैं जो पुरानी दवा को बाजार से बाहर कर देती हैं।** अर्थात् ऐलोपेथी वाले अभी सीख रहे हैं। पूरे सीखे नहीं हैं।

एलोपेथी का इतिहास भी तो मात्र 250 वर्ष पुराना है। इससे पहले तो यूरोप वाले कुल्हाड़ी और आरी से शल्यक्रिया किया करते थे और सिर पर लाठियां मार कर मरीज को बेहोश किया जाता था। तो कहां परिपूर्ण आयुर्वेद और कहां ऐलोपेथी??.....

4. शल्य क्रिया–शल्य क्रिया को लेकर एलोपेथी के बारे में हमारे दिमाग में बहुत बड़ी इज्जत है। यह हमारा भ्रम है। जिन बीमारियों का बिना शल्य क्रिया किये आयुर्वेद सकुशल पूरी तरह उपचार कर देता है तो शल्य क्रिया करना और करवाना कोई बुद्धिमानी नहीं हुई मगर एक आधुनिक अन्धविश्वास हुआ।

प्राणायाम और आयुर्वेद के अल्पखर्च में हार्ट के ब्लोकेज निकल जाते हैं। किडनी ठीक हो जाती है। लीवर ठीक हो जाता है। तो इस तरह की अन्य भी

कई बीमारियों में हमें ऑपरेशन का एकमात्र रास्ता दिखता है जो सही नहीं है। **ऑपरेशन के बाद जीवन दूभर हो जाता है।** सामान्य नहीं रहता। किडनी बदलवाने से तो अत्यधिक निन्दनीय जीवन बन जाता है और खर्च भी लाखों में करना पड़ता है। तो सही मार्ग कौन सा हुआ?

शल्यक्रिया का सही सदुपयोग तो मात्र आकस्मिक दुर्घटनाओं के वक्त ठीक है। आयुर्वेद में हम शल्य क्रिया का प्रचलन नहीं देखते हैं फिर भी शल्य क्रिया का जनक आयुर्वेद ही है। **'सुश्रुत संहिता' शल्य क्रिया का प्राचीन ग्रंथ है।** इसमें बताये हुए 125 यंत्र आज भी मॉडर्न साइंस ज्यों के त्यों प्रयोग करती है।

5. हिंसा–ऐलोपेथी की अधिकतम दवाएं क्रूर जैविक हिंसा के जरिये बनाई जाती हैं। **पशु, पक्षी और कई जलचरों पर निर्मम अत्याचार करके, लोमहर्षक यातनां दे-देकर बनाई जाती हैं कई ऐलोपेथी की दवाएं!!....**मात्र भारत से ही सन् 1950 से 1978 तक प्रतिवर्ष 50 हजार वानर इंग्लैंड और अमेरिका को निर्यात किये जाते रहे हैं। सन् 1978 में इस पर रोक लगाई गई। मगर भारत की बात छोड़िये, **दुनियां भर से ऐसे लाखों करोड़ों जीवों की बलि दवाई के नाम पर दी जाती है।** क्या यही मानवता है। ठीक इसके विपरीत आयुर्वेद की सभी दवाइयां पूरी तरह शाकाहारी हैं। **आयुर्वेद में औषधियों का निर्माण बनस्पति और खनिजों से होता है।** कुछेक औषधियों में समुद्री जीवाश्मों का जैसे प्रवाल, शंख, मोती इत्यादि का भी प्रयोग होता है मगर इसे हम हिंसा या मांसाहार कहेंगे तो हमारी मूर्खता होगी। अर्थात् मानवता के दृष्टिकोण से मात्र आयुर्वेद की ही दवाएं निरापद हैं और ऐलोपेथी की दवाएं पूरी तरह त्याज्य हैं।

6. विदेशी कम्पनियों की लूट–भारत की अकुशल नीतियों के कारण और भ्रष्टाचार के चलते **भारत में दवाइयों के नाम पर विदेशी कम्पनियां प्रतिवर्ष 6 लाख करोड़ रुपये लूटकर विदेश ले जाती हैं। और होता क्या है इन दवाइयों से, क्या बीमारियां ठीक होती हैं? नहीं, मात्र कंट्रोल में रहती हैं** ताकि इनकी लूट जारी रहे। तो फिर आयुर्वेद से कुछ समय औषध लेकर बीमारी को जड़ से मिटाने में क्या बुराई है?? आयुर्वेद से उपचार लेकर स्वदेशी धन को बचाने का भी काम सिद्ध होता है। सभी बातों पर विचार करने से पूरी तरह सिद्ध हो जाता है कि ऐलोपेथी से आयुर्वेद श्रेष्ठ है।

आयुर्वेद को सरकारी स्तर पर तिरस्कार अपमान एवं उपेक्षा दी गई है जबकि इसे राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति बनाना चाहिए था। इस पर नये अनुसंधान करके इसे उन्नत करना चाहिए था। जो काम सरकार ने नहीं किया वह काम गत कुछ वर्षों से 'पतंजलि योगपीठ' हरिद्वार कर रही है और इसने विश्वभर में आयुर्वेद की साख जमा दी है। पतंजलि योगपीठ के भारत भर में 1000 से अधिक चिकित्सालय हैं जहां निशुल्क वैद्यकीय परामर्श दिया जाता है। हम सबको योग्य है कि अब से हम सब ऐलोपेथी को पूरी तरह छोड़ें और आवश्यकता होने पर अपने निकटतम पतंजलि चिकित्सालय में जायें तथा अपने मित्र परिजनों को भी इसकी सलाह दें। इससे हमारी बीमारी का ईमानदारी से बिना लोभ लालच के सही इलाज होगा। हमें पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होगा और हमारे धर्म और धन की भी रक्षा होगी। जिसे अब भी विश्वास न आता हो तो वे 'पतंजली योगपीठ' की पुस्तक **'विज्ञान की कसौटी पर'** पढ़ें।

कैंसर के बारे में ऐलोपेथी ने अब आयुर्वेद से हाथ मिलाया है और भारत की शीर्षस्थ कैंसर शोध संस्था में इस बात पर शोध होगा कि स्वामी जी ब्लड कैंसर, ब्रेन कैंसर और बोनकैंसर को कैसे ठीक कर देते हैं और दवाइयां किस तरह अपना काम करती हैं, **प्राणायाम की क्या भूमिका है??** यह ऐलोपेथी पर आयुर्वेद की विजय का एक पायदान है।

ऐलोपेथी को मात्र कोसने से काम नहीं चलेगा। टी.बी. (क्षय रोग) के इलाज के बारे में धन्यवाद भी देना पड़ेगा.....क्योंकि ऐलोपेथी से अच्छा अचूक इलाज टीबी का अन्यत्र कहीं नहीं है।

–496, शनिवार पेठ, इलिना एपार्ट, पुणे ☐☐☐

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। –सम्पादक

विषम परिस्थितियों में एकमात्र विकल्प

—मा.स. गोलवलकर

देश आज भीषण संकटों से गुजर रहा है। अनेक अन्तर-बाह्य समस्याएं सम्मुख उपस्थित हैं। देश की बड़ी संस्था कांग्रेस दो गुटों में विघटित हो चुकी है। जरासन्ध के समान उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए हैं, जिनमें अब इस बात की होड़-सी लगी है कि **कौन अधिक समाजवादी है! कौन अधिक वामपन्थी है।** कांग्रेस के विभाजन और उसकी दुर्बलता का लाभ उठाकर विदेशी शक्तियों का हस्तक्षेप देश में बढ़ रहा है।

भारत के विभिन्न मामलों में उनकी रुचि हमारी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और संप्रभुता के लिए भयंकर संकट का कारण बन गई है। **देश में आज समाजवाद एक फैशन-सा हो गया है** जबकि स्वयं रूस में यही समाजवाद पूर्णतः असफल सिद्ध हो चुका है। किन्तु फिर भी हमारे देश के कुछ नेता उसे अपनाने के लिए बढ़-चढ़कर दावे करते जा रहे हैं। 40 वर्षों के अपने घोषित समाजवाद में रूस अपनी जनता के लिए अपेक्षित पर्याप्त अनाज भी उत्पन्न न कर सका। उसे भी कनाडा और आस्ट्रेलिया से अनाज मंगाना पड़ रहा है। **रूस घोषित 'साम्य' की स्थिति भी ना ला सका।** वहां भी अमीर और गरीब हैं। अनेक प्रकार के वर्ग उभर आए हैं।

अपने को समाजवादी घोषित करने वाले रूस में ही समाजवाद का प्रयोग असफ़ल सिद्ध हो चुका है; किन्तु फिर भी **भारत में कुछ लोग अपने को रूस का भक्त घोषित करते हैं। कुछ लोग चीन के भक्त हैं, वे चीन के नेताओं माओत्से-तुंग को ही अपना नेता मानते हैं।** उनकी योजनाओं को भारत में कार्यान्वित करना चाहते हैं।

भारत में उपद्रव, अशान्ति निर्माण कर राष्ट्र-जीवन को ध्वस्त कर डालने की घोषणा करने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती।....यह दुर्भाग्य की ही बात है कि ऐसी लोगों को भारत में न केवल संवैधानिक ढंग से नागरिकता प्राप्त है वरन् वे यहां के शासनतन्त्र पर अधिकार जमाने की चेष्टाएं भी कर रहे हैं। यह नहीं मानना चाहिए कि चीन अब हमारे ऊपर आक्रमण नहीं करेगा।.....

आज देश में 'राष्ट्रीयकरण' की चर्चा बहुत चल रही है। परन्तु यहां के सम्प्रदायों के राष्ट्रीयकरण की ओर किसी का प्रयत्न नहीं।......

यहां रहनेवाले सभी सम्प्रदायों को भारतीय जीवन-पद्धति, भारतीय-परम्परा के साथ एकरस होकर इस देश के कण-कण को पवित्र मानकर इससे प्रेम करना सीखना चाहिए। **भारत को बहुमत और अल्पमत में विभाजित न कर, उसके सभी निवासियों में उत्कट राष्ट्रभक्ति जाग्रत करनी होगी।**

चैतन्य माता का स्वरूप

जिस प्रकार यहां का हिन्दू समाज पर्वतों को देवताओं का निवास-स्थान मानता है, यहां की नदियों के जल को पवित्र मानकर उसे मस्तक पर धारण करता है, इस देश की मिट्टी को चैतन्य, माता का स्वरूप मानकर पूजता है, उसी प्रकार **जब सभी सम्प्रदाय भारत-भूमि के प्रति ऐसा ही सच्चा प्रेम करेंगे तभी पारस्परिक कलह समाप्त होगी और राष्ट्रीयता का उदय होगा।**

यहां रहने वाले **पारसियों** ने जिस प्रकार इस देश की परम्पराओं को स्वीकार कर लिया है, उसी प्रकार का अनुकरण अन्य अल्मत को करना चाहिए। प्रत्येक अल्पमतावलम्बी अपनी उपासना की पद्धति अलग रखते हुए भी भारतीय परम्पराओं से समरस हो सकता है!!

किन्तु....राजनीतिक स्वार्थसिद्धि के लिए हमारे आज के नेतागण अल्पसंख्यकों को इस देश के राष्ट्रीय जीवन के साथ एकरस नहीं होने देते। **उनके मन में आशंकाए उत्पन्न कर उनकी पृथक्ता को बढ़ाया देते हैं। इसी के कारण देश में साम्प्रदायिक उत्पात होते हैं।**

हिन्दू समाज का स्वरूप साम्प्रदायिक नहीं है। वह तो विभिन्न उपासना-पद्धतियों में आस्था और विश्वास रखनेवालों के साथ भी सहयोग करने तथा सहिष्णुता के कारण मिल-जुलकर रहने में विश्वास करता है। **देश में पारस्परिक संघर्ष और झगड़े की स्थिति समाप्त करने तथा विभिन्न वर्गों में सद्भाव उत्पन्न करने हेतु सभी अल्पसंख्यकों का भारतीयकरण होना चाहिए।...**

उनके हृदय में भी इस भूमि के प्रति माता का भाव चाहिए। **वे अपने को इस भूमि का पुत्र अनुभव करें।** विभिन्न उपासना-पद्धति के बाद भी वे राष्ट्रजीवन के साथ समरस हों।

'यह भी साम्प्रदायिकता है'

यदि पाकिस्तान से युद्ध के समय **अब्दुल हमीद** ने कुछ वीरता दिखाई तो कुछ लोग केवल उसकी ही प्रशंसा करने लगे। बार-बार उसका उल्लेख होने लगा। वास्तव में इससे तो यही सिद्ध होता है कि देश सम्प्रदायों में बंटा है। उस युद्ध में और भी असंख्य योद्धाओं ने अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन किया है, परन्तु....**कोई मुसलमान या ईसाई कहीं अपनी देशभक्ति का प्रदर्शन कर दे तो सिर्फ उसी का ढोल पीटना भी तो साम्प्रदायिकता ही है।**

सदियों की पराधीनता के कारण हममें जो दासता

की मनोवृत्ति उत्पन्न हो गई है, उसके कारण भारत आज एक सूत्र में आबद्ध होकर स्वाभिमानी एवं शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में नहीं खड़ा हो पा रहा है।

'जघन्यवृत्ति'

पराधीनता के कारण हमारा राष्ट्रनिर्माण मर-सा गया है। अपने को हिन्दू कहने तक में संकोच होता है। हजार-बाहर सौ वर्षों की गुलामी के बाद गत बीस-तीस वर्षों में हमें पराजय और पराभाव ही झेलना पड़ा है। जो हमसे शत्रुता रखते थे, उन्हें ही हमने अपने देश का हिस्सा अपने ही हाथों से काट कर दे दिया। देश के कुछ बड़े लोग भले ही इसे उदारता कहकर सन्तोष कर लें; लेकिन यह भारत का बहुत बड़ा पराभाव ही है। **ऐसा विरला ही होगा कि जो अपनी पत्नी को भगा ले जाने वाले का अभिनन्दन करके कहे कि वाह! तुमने हमें संकटों से मुक्ति दी।** अपना पराभव करने वालों की भी जो सराहना करते हैं, वे अत्यन्त पतित और जघन्यवृत्ति के व्यक्ति ही होंगे।

संसार में शक्ति की ही उपासना होती है। प्रत्येक देश का मान उसकी सामर्थ्य एवं स्वाभिमान से ही आंका जाता है, सिर झुकाने तथा दूसरों के आगे गिड़गिड़ाने से नहीं।.....

जब हिटलर जीतने लगा, तो बहुत से लोगें ने उसे देवपुरुष कहा। यह भी आकांक्षा व्यक्त की कि ब्रिटिश शासन के स्थान पर हिटलर आ जाए; किन्तु जब वह पराजित होने लगा, तो उन्हीं लोगों ने उससे मुंह फेर लिया। **शक्तिशाली को ही विश्व में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।**

अमेरिका का षड्यन्त्र

किन्तु रूस और अमरीका दोनों ही भारत को एक शक्तिसम्पन्न सुसंगठित राष्ट्र के रूप में देखना नहीं चाहते। **वे ऊपर-ऊपर से आर्थिक सहायता देकर भीतर से हमारे राष्ट्रजीवन को छिन्न-भिन्न कर देना चाहते हैं।** दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी आन्दोलन को अमरीका की गुप्तचर संस्था **(सी.आई.ए.)** ने सहायता और मदद दी थी। रूस भी भारत स्थित अपने एजेण्टों एवं पाकिस्तान को सैनिक सहायता देकर सतत भारत को दबाव में रखना चाहता है।

आज की इन विकट परिस्थितियों में देश में आत्मविश्वास एवं शक्ति उत्पन्न करने के लिए समाज को पुन: सुसंगठित करने की आवश्यकता है। **विघटन और फूट के कारण ही हमारी पराजय हुई और विदेशों में हमारा सम्मान घटा है।.....विशुद्ध राष्ट्र भाव के आधार पर आसेतु हिमाचल एक सामर्थ्यसम्पन्न -शक्तिशाली संगठन खड़ा करना ही आज की विषम परिस्थितियों का एकमात्र निदान है।**

-(लखनऊ में हुए प्रान्तीय शिविर के बौद्धिक से)

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्र:

सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तो आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे-धीरे घर से देवी-देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले-भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुँचा रहे हैं, इनका परित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्चा में ले जाकर ईसाई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहाँ भी ईसाई मिशनरियों अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने को लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्यसमाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातनसभाएं भी सक्रिय हों।
- बौद्ध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द्र, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। **मानवता की रक्षा हेतु** हिन्दुत्व की रक्षा करनी आवश्यक है।

अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

चन्द्र प्रकाश कौशिक	मुन्ना कुमार शर्मा	वीरेश कुमार त्यागी
अध्यक्ष	मन्त्री	कार्यालय मन्त्री

स्वास्थ्य-चर्चा

सौ वर्ष तक कैसे पाएं-आरोग्य!

-डॉ. हर्षवर्धन

(मंत्री- विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन (भारत सरकार)...... एम.बी.बी.एस., एम.एस. (ई.एन.टी.).....)

आदरणीय भ्राता-डा. हर्षवर्धन जी के किसी विशेष परिचय की आज आवश्यकता नहीं.... देश-विदेश में उनके नाम की गूंज स्वत: ही सुनाई देती है। पोलियो, जैसे असाध्य रोग का उन्मूलन देशभर में हुआ यह उनकी देश-समाज को अविस्मरणीय ऐतिहासिक देन है। विश्व स्तर पर भी उनके अभूतपूर्व कार्यों की सराहना, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों व विश्व के सर्वोच्च सम्मानों द्वारा, कभी आख्यानों द्वारा होती ही रहती है। पिछले कुछ अंकों से हमने उनका यह कॉलम आरम्भ किया है।.... विश्वास है कि भविष्य में भी इसी तरह हमें सर्वदा उनका मार्गदर्शन मिलता रहेगा।.... -दिव्या आर्य

आरोग्य के पिछले अनेक अंकों में मैंने आहार एवं व्यायाम के कुछ स्वरूप की चर्चा प्रारंभ की थी जो कि शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने के लिए महत्वपूर्ण नींव के रूप में काम करते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के संविधान के अनुसार..... **'स्वास्थ्य एक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दृष्टि से स्वस्थ रहने की प्रक्रिया है, न कि केवल शरीर में बीमारी अथवा रोग एवं दुर्बलता का न होना है।'.....**

आखिर स्वास्थ्य क्या है? क्या हमने इसके बारे में गंभीरता से विचार किया है?...**सभी संत महात्माओं एवं धार्मिक गुरुओं ने स्वास्थ्य की उपयोगिता के बारे में समय-समय पर चर्चा की है।**

थॉमस जैफरसन ने एक बार कहा था कि अगर जीवन में कोई संपत्ति है तो वह है अच्छा स्वास्थ्य!.. ..**गांधी जी** ने स्वयं पूरे जीवन एक अनुशासनात्मक जीवन पद्धति के माध्यम से अच्छे स्वास्थ्य को सुरक्षित रखा और सारे देशवासियों को भी इन्हीं सकारात्मक नियमों को पालन करने के बारे में मार्गदर्शन करते रहे। उनका जीवन इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि किस प्रकार हम छोटे-छोटे नियमों का पालन कर स्वस्थ रह सकते हैं।....

हमारे पूर्वजों ने हमें बताया है कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुगम रास्ता अच्छे मन और आत्मा के माध्यम से ही जाता है और मन तथा विचारों को नियंत्रित और संयमित कर हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं।

आज विश्व स्वास्थ्य संगठन भी स्वास्थ्य की परिभाषा में आध्यात्मिक पहलू को जोड़ने पर मजबूर होता नजर आता है। **स्वास्थ्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। स्वास्थ्य एक ऐसा खजाना है जो न हमें विज्ञान दे सकता है और न ही धन-दौलत के माध्यम से इसे खरीदा जा सकता है।** ....

पिछले कुछ दशकों में स्वास्थ्य के महत्व के बारे में सारे संसार में व्यापक जागरूकता पैदा हुई है और सभी ने इस बात को स्वीकार किया है कि **अच्छे स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र के माध्यम से ही दूसरी अनेक ज्वलंत समस्याओं पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की जा सकती है।**

इस स्वस्थ शरीर की चर्चा को आगे बढ़ाते हुए इस लेख के माध्यम से **आध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्राप्ति के मार्ग** की चर्चा प्रारम्भ करेंगे।....

सामान्यत:....**हम सब अपने जीवन का अधिकांश समय पेट की भूख को शांत करने से जुड़ी प्रक्रियाओं में और इसके लिए जाने-अनजाने केवल पैसे की अंधी दौड़ में भागने में लगाते रहते हैं।**

वासना, तृष्णा और अहंकार जैसे बंधन हमें समय-समय पर जकड़ लेते हैं।.... **इस स्थिति पर काबू कर अंत:करण की भावनाओं, मन:स्थान की विचारणाओं को उत्कृष्ट आध्यत्मिकता के साथ जोड़ देने के सुयोग को योग कहते हैं।**....जापान में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी **(शेष पृष्ठ-39 पर)**

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम दस और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान मासिक' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है।.......

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का, सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का, तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को गुँजाने का, हिन्दुत्व के विश्वबन्धुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाएं, अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन दें।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुँचे जनज्ञान।

सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

पांच वर्ष- /- रु०, और आजीवन ५१००/- रु० हैं

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" वेद मन्दिर, केशव नगर, दिल्ली-36 के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशि सीधे यूनियन बैंक करोलबाग नई दिल्ली-5 के खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। **बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।**

॥ ओ३म् ॥

॥ जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं॥

"परमात्मा" की
दिव्य-सनातन वाणी

ऋग्वेद

सामवेद

यजुर्वेद

अथर्ववेद

चारों वेद
का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित २३X३६ सें. मी. साइज में कुल पृष्ठ-२२००, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।)

श्रेष्ठ बढ़िया कागज पर लागत मूल्य - ४०००/- रूपये

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ॥

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST

hCCt

god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)

D-94, Saket, New Delhi-110017
Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

درد دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لیے کچھ کم نہ تھے کروبیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करुँ बयां

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری
زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے
ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
زندگی ہو مری پروانے کی صورت یا رب
علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یا رب
ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا
درد مندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
مرے اللہ برائی سے بچانا مجھ کو
نیک جو راہ ہو اس راہ پہ چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईफों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

एप्पल कम्पनी के संस्थापक स्टीव जॉब्स के अन्तिम शब्द

एक समय था जब मैं व्यापार जगत् की ऊंचाईयों को छू चुका था, लोगों की नज़र में मेरी जिन्दगी सफलता का एक बड़ा नमूना बन चुकी थी लेकिन आज खुद को बेहद बीमार और इस बिस्तर पर पड़ा हुआ देखकर मैं कुछ अजीब-सा महसूस कर रहा हूं। **पूरी जिन्दगी मैंने कड़ी मेहनत की, लेकिन खुद को खुश करने के लिए या खुद के लिए समय निकालना जरूरी नहीं समझा। जब मुझे कामयाबी मिली तो मुझे बेहद गर्व महसूस हुआ, लेकिन आज मौत के इतने करीब पहुंचकर वह सारी उपलब्धियां फीकी लग रही हैं।**

आज इस अंधेरे में, इन मशीनों से घिरा हुआ हूं। मैं मृत्यु के देवता को अपने बेहद करीब महसूस कर सकता हूं। आज मन में एक ही बात आ रही है कि **इन्सान को जब यह लगने लगे कि उसने अपने भविष्य के लिए पर्याप्त कमाई कर ली है, तो उसे अपने खुद के लिए समय निकाल लेना चाहिए, और पैसा कमाने की चाहत न रखते हुए, खुद की खुशी के लिए जीना शुरू कर देना चाहिए,** अपनी कोई पुरानी चाहत पूरी कीजिए!!.....

बचपन का कोई अधूरा शौक, जवानी की कोई ख्वाहिश या फिर कुछ ऐसा जो दिल को तसल्ली दे सके। **किसी ऐसे के साथ वक्त बिताना चाहिए जिसे आप खुशी दे सकें** और बदले में उससे भी वही हासिल कर सकें। क्योंकि जो पैसा सारी ज़िन्दगी मैंने कमाया, उसे मैं साथ लेकर नहीं जा सकता। **अगर मैं कुछ लेकर जा सकता हूं, तो वे यादें।** ये यादें ही तो हमारी **'अमीरी'** होती हैं, जिनके सहारे हम सुकून की मौत पा सकते हैं, क्योंकि ये यादें और उनसे जुड़ा प्यार ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो मीलों का सफर तय करके आपके साथ जा सकती हैं। आप जहां चाहें इसे लेकर जा सकते हैं, जितनी ऊंचाई पर चाहें, वे आपका साथ दे सकती है; क्योंकि इन पर केवल आपका हक़ है।

जीवन के इस मोड़ पर आकर मैं बहुत कुछ महसूस कर सकता हूं। **जीवन में अगर कोई सबसे महंगी वस्तु है, तो वह शायद 'डेड बैड' ही है;** क्योंकि.....आप पैसा फैंककर किसी को अपनी गाड़ी का ड्राइवर बना सकते हैं, जितने मर्जी नौकर-चाकर अपनी सेवा के लिए लगा सकते हैं, लेकिन **इन डेथ-बैड पर आने के बाद कोई दिल से आपको प्यार करे, आपकी सेवा करे, वह चीज़ आप पैसे से नहीं खरीद सकते।**

मेरी गुज़ारिश है आप सबसे कि अपने परिवार से प्यार करें, उनके साथ वक्त बिताएं, इस बेशकीमती ख़जाने को बर्बाद न होने दें, खुद से भी प्यार करें।

आपका-स्टीव जॉब्स ●●●

(पृष्ठ-36 का शेष)

सारे संसार के विशेषज्ञों ने इस बात को स्वीकार किया कि इक्कीसवीं शताब्दी में योग के माध्यम से उत्पन्न ऊर्जा ही संसार के स्वास्थ्य के लिए सबसे श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण कारण सिद्ध होगी।

आत्मा जब परमात्मा तक पहुंचने के लिए प्रयत्न करती है तो संचित कुसंस्कार इस मार्ग में अनेक अड़चनें उत्पन्न करते हैं और इन अड़चनों पर विजय प्राप्त करना ही योग साधना है।

योगाभ्यास के नाम से अपनाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की क्रियाओं के मूल में एक ही उद्देश्य व्याप्त है कि **अंतरात्मा को पशु रूपी प्रवृत्तियों एवं व्यवहार से मुक्त कर महानता की विशालता के साथ जोड़ दिया जाए। मन को वश में करने की मुक्ति ही योग है।**

महर्षि पतंजलि ने कहा भी है-**'योगश्चित्त वृत्ति निरोधाः।'**

चित्तवृत्ति के निरोध से ही योग की उत्पत्ति होती है और इसी की प्राप्ति योग अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति का लक्ष्य है।

गीता में भगवान कृष्ण ने योग का महत्त्व बताते हुए कहा है कि **यद्यपि मन चंचल है फिर भी योगाभ्यास तथा उसके द्वारा उत्पन्न वैराग्य द्वारा उसे वश में किया जा सकता है।**

जिस प्रकार घोड़े को एक स्थान पर बांधकर उसकी चपलता को नष्ट कर दिया जाता है, उसी प्रकार योग द्वारा मन को भी सीमित किया जा सकता है।

आगामी लेखों में इसी योग साधना की चर्चा को आगे बढ़ायेंगे।....

आइये, आज यह संकल्प करें कि हमारा जीवन सकारात्मक स्वास्थ्य के इस महत्वपूर्ण पहलू से अछूता नही रहे और योग साधना हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करे।

□□□

दो महान् त्यागी

वरतंतु कौत्स को बहुत प्यार करते थे। न जाने कहां से आकर एक दिन वह उनके द्वार पर आकर खड़ा हो गया था। तब से उन्होंने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। महर्षि का उस पर सच्चा स्नेह था। उन्होंने उसे अपना समस्त ज्ञान प्रदान किया था। अब कौत्स के लिए आश्रम में रुकना उचित न था। अत: वह गुरु के सम्मुख हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। वरतंतु ने आंख उठाकर देखा, उनकी आंखों में प्रश्न था?

कौत्स ने कहा, "गुरुदेव!" यहां से जाने से पूर्व मुझसे गुरु दक्षिणा ले लें। गुरु-ऋण चुकाए बिना मेरी विद्या व्यर्थ हो जाएगी।

वरतंतु ने हंसकर कहा, "तुमने स्वयं ही इतनी सेवा की है कि मुझे और कुछ नहीं चाहिए।" कौत्स फिर भी नत-मस्तक खड़ा रहा। उसने फिर वही बात दुहराई, "भगवान! मुझे कुछ आज्ञा अवश्य दें। बिना आपकी सेवा में कुछ अर्पण किए मुझे कहां संतोष होगा?"

गुरु मुस्कराए। उनकी आंखों में अपने शिष्य की एक और परीक्षा लेने का भाव उभरा और उन्होंने कहा, **"यदि तुम नहीं मानते हो तो अपनी सीखी चौदह विद्याओं के लिए चौदह सहस्त्र स्वर्ण मुद्राएं लाकर दे जाओ।"** कौत्स ने गुरु आज्ञा शिरोधार्य की। उनके पांव सीधे अयोध्या की ओर बढ़ चले।

उन दिनों चक्रवर्ती सम्राट् रघु राज्य करते थे। कौत्स को अपनी सभा में आया देखकर रघु ने उठकर दंडवत् की, चरण धोए एवं उनका विविधवत् पूजन किया। कौत्स निर्विकार भाव से यह सब देखता रहा। पूजन की समाप्ति पर वह उठकर जाने लगा।

राजा रघु हाथ जोड़कर सामने खड़े हो गए बड़े ही विनम्र स्वर में पूछा, **"ऋषिवर! आपने सेवा की कुछ आज्ञा नहीं दी?** अवश्य ही मेरी सेवा में कोई त्रुटि रही है।"

कौत्स के आने के कुछ दिन पूर्व ही सम्राट् रघु ने जनहित में किए गए विश्वजित यज्ञ में अपना सर्वस्व दान कर दिया था। यह बात कौत्स को ज्ञात न थी। सम्राट् की अभ्यर्थना में मिट्टी के पात्रों को देखकर वह समझ गया कि यहां अभीष्ट की पूर्ति संभव नहीं है। अत: वह उठकर जाने लगा था, परंतु राजा ने बारंबार आग्रह करने पर अपने आगमन का कारण बताते हुए उसने कहा, "राजन! मैं आपके पास गुरु दक्षिणा के लिए आया था, परन्तु आपने तो अपना सर्वस्व दान कर दिया है। यहां तक कि अतिथि सत्कार के लिए बरतन भी आपके मिट्टी के पात्र रह गए। इस दशा में मैंने आपसे कुछ भी कहना अनुचित समझा। आप संकोच न करें। मैं अन्यत्र जा रहा हूं, मेरे अभीष्ट की पूर्ति हो जाएगी।"

राजा रघु के द्वार से कोई याचक वापस चला जाए, यह असंभव था। सम्राट ने कौत्स से प्रार्थना की, "महात्मन् मुझे तीन का समय दें। मैं आपकी इच्छा को अवश्य पूर्ण करूंगा। रघु के द्वार से कोई स्नातक निराश लौट जाए, इस कलंक से मेरी रक्षा करें।"

कौत्स ने तीन दिन के लिए उनका आतिथ्य स्वीकार कर लिया। रघु वापस अपने महल नहीं आए। सीधे युद्ध के लिए सजे हुए रथ में सवारी कर युद्ध की तैयारी में जुट गए। **उन्होंने सोचा की मैं पृथ्वी के समस्त राजाओं से कर ले चुका हूं। दुबारा इतना शीघ्र फिर से उनसे कर की याचना करना अन्याय एव अनीति होगी।** अत: उन्होंने सीधे धनाशीश कुबेर पर चढ़ाई करने का संकल्प किया और उसी पर रथ पर सो गए।

प्रात: काल राजा के उठते ही राज्य के कोषाध्यक्ष ने सूचना दी की कोष में आकाश से स्वर्ण की वर्षा हो रही है। सम्राट् मुस्करा उठे। कोषपाल कुबेर ने चुपचाप रघु का खजाना भर देने में ही अपनी कुशलता समझी। अत: उन्होंने स्वर्णमुद्राओं का ढेर लगा दिया।

रघु ने कौत्स को बुलाकर समस्त धन लेने का आग्रह किया। कौत्स ने हंसते हुए कहा, **'राजन! मुझे धन की क्या आवश्यकता? मैं तो केवल चौदह सहस्त्र मुद्राएं ही लूंगा, बस। शेष धन आप चाहें तो दान कर दें।"** राजा रघु ने शेष सारा धन गांवों को दान कर दिया। दो महान त्यागियों के बीच का त्याग जीवंत दीख रहा था। कौत्स ने अपना इच्छित धन लेकर गुरु दक्षिणा के लिए प्रस्थान किया।

-(संस्कारम् से साभार) ●●●

मेरी जीवन में मेरी इच्छा पूर्ण हो या न हो पर मुझे विश्वास है कि दयानन्द संस्थान के रूप में जो पौधा मैंने लगाया है उसके द्वारा सही दिशा में कार्य होता रहेगा और आज या कल, शीघ्र ही वह समय आएगा जब धरती के सारे लोग वैदिक धर्म की राह पर चलेंगे। दयानन्द संस्थान के कामों की सराहना देश-विदेश की जनता कर रही है।

-पण्डिता राकेश रानी

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

<u>गतांक से आगे....</u>

–महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

कैसे उन्हें बीमारी से छुटकारा मिला। कहने का मतलब यह कि जितने लोग आते, अलग-अलग तरह से अपना तजुर्बा सुनाते, जबकि तकलीफ से परेशान होने की वजह से कई बार मुझे इन बातों से चिढ़ होने लगती थी। **हां, डॉक्टर आदि का नाम बताने पर एक बार मन में यह भी ख्याल जरूर आ जाता कि क्या पता, वही डॉक्टर मेरे लिए भगवान बन जाए।**

मेरे एक बहुत अच्छे दोस्त थे रलाराम जी, जो लाहौर के रहने वाले थे। वे हमारे माल की बिल्टियां बनवाया करते थे। हमारा जो माल रेल से बाहर के लिए सप्लाई होता था, उसी के लिए ये बिल्टियां बनवानी पड़ती थीं। एक दिन रलाराम जी कहने लगे कि आप कोबरा वैनम के इंजेक्शन लगवाएं, इससे आप बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे। मरता क्या न करता, **मैंने सोचा कि चलो जब इंजेक्शन लगवाने से ही यह जानलेवा तकलीफ दूर हो जाएगी, तो यह भी करके देख लेते हैं।**

उनकी सलाह पर मैंने पहाड़गंज में जो हमारे शहर सियालकोट के डॉक्टर वासदेव कोहली जी का दवाखाना था, उनके पास जाकर कोबरा वैनम के इंजेक्शन लगवाना शुरू कर दिया। मगर उस इंजेक्शन से फायदा क्या होगा, मेरा तो रंग ही एकदम काला पड़ने लगा तथा तेरी टांग थोड़ी पतली और छोटी हो गई। बाद में इन परेशानियों को देखते हुए मैंने इंजेक्शन लगवाने बंद कर दिए। **मुझे पूरा आराम मिला, तो केवल अपने चाचा अमरनाथ की सलाह पर ध्यान देकर मालिश और शीर्षासन करने से, उनकी बतायी गई आयुर्वेदिक दवा लेने से और बाई-बादी वाली चीजों से परहेज करने से।**

इसे आप मेरी खासियत समझें या फिर जो भी नाम दें, **बचपन से लेकर आज तक सुस्ती, दिन में भी बेवजह बिस्तर पर लेटे रहना मुझे जरा भी नहीं सुहाता।** आज भी जब कोई डॉक्टर बेड रेस्ट की सलाह देते हैं, तो मैं मुस्कराकर कह देता हूं कि भाई, ये तो मेरे वश की बात नहीं है, आप रीचार्ज होने के लिए मुझे और कोई एक्सरसाइज आदि क्यों नहीं बता देते?

खैर! उस समय भी जब डॉक्टर ने कह दिया था कि चलना-फिरना बिलकुल नहीं है, तो मुझे उसकी सलाह ठीक नहीं लगी थी। **आत्मा से यही आवाज आ रही थी कि अगर इसी तरह चारपाई पर पड़ा रहा, तो टांग कैसे ठीक होगी।** कुछ दिनों तक तो मैंने सब्र किया, मगर जल्दी ही बिस्तर पर लेटे-लेटे ऊब गया। आखिर सोच-विचार कर मैंने फैसला किया कि जब मरना है है, तो चलते-फिरते ही मरना ठीक होगा। एक मशहूर कहावत है—चलता-फिरता लोहा बैठ गया सो गया, लंबा पड़ा सा मोया—मतलब कि **चलते-फिरते रहने से आदमी लोहे-सा कड़क रहता है, बैठ जाने पर गोबर की हालत हो जाती है और बिस्तर पर पड़ गया वह तो मरे हुए के समान ही है।** इसलिए मैंने बिस्तर छोड़ने में ही अपनी भलाई समझी।

हालांकि टांग चलने-फिरने को बिलकुल तैयार नहीं थी, फिर भी मैंने बिस्तर छोड़कर बाहर निकलने का प्रोग्राम बना ही लिया।

टांग के असहनीय दर्द के बावजूद मैंने खजूर रोड से बाड़ा हिन्दूराव, सदर बाजार और कुतुब रोड होते हुए खारी बावली वाली अपनी दुकान पर, जाना शुरू कर दिया। घर के लोग लाख मना करते रहे, मैंने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन इसमें मुझे बहुत ज्यादा तकलीफ होती थी, उस तकलीफ को मैं आपको लिखकर नहीं बता सकता। दस-पंद्रह कदम चलने के बाद ही बैठ जाना पड़ता था। तन पर सफेद लिबास होता, तो राह में आने-जाने वाले लोग पूछ बैठते—क्या बात है, आप इस तरह क्यों बैठे हैं?

–क्रमशः...

स्वास्थ्य विचार

वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की समस्यायें

–डॉ. फणिभूषण दास

गतांक से आगे....

चिकित्सक से संपर्क स्थापित करके उनके उपयुक्त उपचार की व्यवस्था करना आवश्यक होता है और साथ ही निम्नांकित उपायों को कार्यान्वित करना भी आवश्यक होता है–

ग्रसित व्यक्तियों को अगर निगलने में कठिनाई/परेशानी नहीं हो तो शर्करा-रहित पेय देते रहना लाभदायक होता है।

रक्त में शर्करा/चीनी की मात्रा की जांच प्रत्येक 15 मिनट के अंतराल पर करते रहने से स्थिति की प्रगति का पता चलता है।

अगर रक्त में शर्करा/चीनी की मात्रा 240 मिलीग्राम या इससे भी अधिक हो तो मूत्र/पेशाब में कीटोन की मात्रा की जांच आवश्यक हो जाती है।

इनसुलिन लेने वाले रोगियों में इसकी मात्रा में परिवर्तन करने की आवश्यकता हो जाती है। जो संबंधित चिकित्सक की जिम्मेदारी होती है। इस परिवर्तन के लिए संबंधित चिकित्सक से संपर्क स्थापित करके परिवर्तन कराना आवश्यक होता है।

अतिशर्करा रक्तता (हाईपरग्लाईसिमियां) के कारण–अतिशर्करा रक्तता (हाईपरग्लाईसिमियां) के मुख्य कारणों पर विचार करने के लिए निम्नांकित तथ्यों पर ध्यान देने से स्थिति साफ हो जाती है और इस पर विचार करना आसान हो जाता है क्योंकि उन्हीं कारणों से यह स्थिति उत्पन्न होता है। ये कारण इस प्रकार है–

- निर्धारित मात्रा से कम में इनसुलिन का सेवन या इसके सेवन में अनियमितता के कारण यह स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- भोज्य पदार्थों का अनियंत्रित रूप से अत्यधिक अधिग्रहण से यह स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- संक्रमण (इन्फेक्सन), ज्वर या अन्य अस्वस्थता उत्पन्न करने वाले रोगों से ग्रसित हो जाने पर इस स्थिति की संभावना उत्पन्न हो जाती है।
- भावनात्मक तनाव (इमोशनल स्ट्रेस) के फलस्वरूप भी इस स्थिति के उत्पन्न होने की संभावना बन जाती है।

अल्पशर्करा रक्तता **(हाईपोग्लाईसिमियाँ)** और अति शर्कारा रक्तता **(हाईपरग्लाईसिमियां)** दोनों ही मधुमेह (डायबिटीज) से उत्पन्न होने वाले उपद्रव (कम्प्लीकेशन्स) हैं जो बहुत ही खतरनाक होते हैं और प्राणघातक भी हो सकते हैं। इसलिए इनसे निपटने के लिए इन दोनों में फर्क करना बहुत आवश्यक है। इसलिए इन दोनों के कारणों को समझना और उन्हें ध्यान में रखना उनसे निपटने में सहायक होता है।

मधुमेह जनित अन्य महत्वपूर्ण उपद्रव (कम्प्लीकेशन्स)–मधुमेह (डायबिटीज) के रोगियों में, विशेष कर वृद्ध रोगियों में मधुमेह (डायबिटीज) के साथ इससे उत्पन्न होने वाले कई अवस्थता-जनक उपद्रव (कम्प्लीकेशन्स) उन्हें ग्रसित कर लेते हैं **जो उनके जीवन की बची हुई आयु को संकटग्रस्त कर देते हैं और वे कठिन समस्याओं से घिर जाते हैं।** इन उपद्रवों में निम्नांकित मुख्य हैं–

- उच्च रक्तचाप **(हाई ब्लड प्रेसर/हाईपरटेंशन)**
- अरक्तता जनित हृदय रोग (इसकिकिम हार्ट डिजीज)
- नेत्र विकार **(ऑफथेलमोलोजीकल डिसोरडर्स)**
- तंत्रिका प्रणाली के विकार **(डिसोरडर्स ऑफ नरवस सिस्टम)**
- जठरांत्रिक विकार **(गैस्ट्रोइनटेस्टाईनल डिजोरडर्स)**
- शरीर की अद्य:शाखा **(लोअर एक्सट्रिमिटी)** के विकार

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेसर/हाईपरटेंशन)–ऐसा देखा गया है कि सामान्यत: मधुमेह (डायबिटीज) के रोगी उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेसर) से भी ग्रसित रहते हैं जो वृद्धावस्था में सामान्य से अधिक होता है और **इन दोनों रोगों के संयुक्त प्रभाव से इन रोगियों में गंभीर अस्वस्थता उत्पन्न हो जाती है क्योंकि उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेसर) मधुमेह (डायबिटीज) से उत्पन्न होने वाले उपद्रबों (कम्प्लीकेशन्स) के वैकृत्तिक जनन की प्रक्रिया (पैथोजेनिक प्रोसेस) को शीघ्रता से आगे बढ़ाने में बहुत सहायक होता है।**

इसलिए मधुमेह (डायबिटीज) के दुष्प्रभावों और इससे होने वाले अन्य उपद्रवों (कम्प्लीकेशन्स) को रोकने या उनके प्रभावों को कम करने या नियंत्रित करने के लिए उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेसर) को नियंत्रित करने के लिए उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेसर) को नियंत्रित करना स्वास्थ्यवर्धक होता है। **–क्रमश:....**

समाचार दर्शन

पाकिस्तान में सिखों को जबरन कबूल करवाया जा रहा है इस्लाम

पेशावर: पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रान्त के हंगू जिले में रहने वाले सिख समुदाय के लोगों का जबरन धर्म परिवर्तन कराने का मामला सामने आया है। समुदाय के लोगों ने आरोप लगाया है कि एक सरकारी अधिकारी उन्हें इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य कर रहा है।

पाकिस्तानी अखबार में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक सिख समुदाय के सदस्यों ने हंगू के उपायुक्त शाहिद महमूद को इसकी शिकायत की है। अपनी शिकायत में, फरीद चंद सिंह ने कहा है कि समुदाय के सदस्य 1901 से इस इलाके में सांप्रदायिक तनाव के बावजूद वे मुस्लिमों के साथ वे शान्ति से रह रहे हैं। **सिंह ने कहा कि अगर ऐसा कोई सामान्य व्यक्ति कहता तो अपमानित करने वाला नहीं होता, लेकिन जब किसी सरकारी अधिकारी से ऐसी चीजें सुनें तो यह गम्भीर मामला हो जाता है।**

प्रशासन की लीपापोती: हंगू के उपायुक्त शाहिद महमूद ने कहा, सिख समुदाय के सदस्य सहायक आयुक्त के साथ बातचीत से नाराज हो गए। सहायक आयुक्त का मतलब वास्तव में वो नहीं था।

केरल में शीतकालीन द्वितीय 'स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर'

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 23 से 31 जनवरी तक केरल में आयोजित होने वाले 'स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर' में भाग लेने हेतु जाने वाले महानुभावों की सभी सीटें पूर्ण हो चुकी हैं। दूसरा स्वाध्याय शिविर मार्च, 2018 में आयोजित किया जाएगा जो आर्यजन सम्मिलित होना चाहें वे संयोजक श्री शिव कुमार मदान जी (9310494979) को अपने नाम लिखवा दें।

सरदार बल्लभभाई पटेल की 142वीं जयन्ती सम्पन्न

सरदार बल्लभभाई पटेल स्मारक ट्रस्ट एवं चंद्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में देसराज परिसर के आर्य सभागार में लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल की 142वीं जयंती आयोजित किया गया। समारोह में पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने अपने सम्बोधन में कहा **'सरदार पटेल प्रधानमंत्री न बने हों परन्तु जो काम वे कर गए वह कई प्रधानमंत्रियों के काम से अधिक है। यदि वे कुछ और हमारे बीच रहते तो कश्मीर समस्या रह नहीं पाती और सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं का भी स्थायी समाधान हो जाता।'**

श्री सुनील शास्त्री ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि वर्तमान सुविशाल भारत का निर्माण सरदार पटेल के बूते की ही बात थी। समारोह का संचालन श्री नीतिंजय चौधरी ने सरदार पटेल को आधुनिक भारत के चाणक्य और चक्रवर्ती संन्यासी के रूप में याद किया। पटेल जयंती को लोकप्रिय बनाने व इसे युवा पीढ़ी से जोड़ने में वीरेश प्रताप चौधरी के योगदान पर वक्ताओं और कवियों ने भावपूर्ण स्मरण किया।

शोक समाचार

बहुआयामी व्यक्तित्व: कृष्णा चढ्ढा

श्रीमती कृष्णा चढ्ढा का जन्म जलालपुर जट्टा जिला गुजरात (पाकिस्तान) में हुआ परन्तु यह बचपन से हिन्दुस्तान विभाजन तक लाहौर में ही रहीं। इनके पिताजी श्री भीमसेन भसीन व माता श्रीमती ज्ञान देवी जी करुणा व ज्ञान की मूर्ति थे। श्रीमती कृष्णा चढ्ढा का विवाह वर्ष 1948 में रामजस रोड, दिल्ली में श्री योगराज चढ्ढा जी के साथ हुआ जो पंजाब नेशनल बैंक से अवकाश प्राप्त हैं। आपकी माताजी राष्ट्रीय अन्धविद्यालय की संस्थापिका सदस्य थीं। वर्ष 1949 से ही आर्य समाज करोल बाग जाया करती थीं, वर्ष 1967 जब आप टैगोर गार्डन आईं उसी समय यहां स्त्री समाज का गठन हुआ और आपको महामंत्रिणी का कार्यभार सौंपा गया, वर्तमान में आप इस समाज की संरक्षिका थीं।

श्री आनन्द कुमार कपूर नहीं रहे

आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार के कर्मठ मंत्री श्री आनन्द कुमार कपूर जी का 65 वर्ष की अवस्था में 6 सितम्बर को निधन हो गया।

स्वामी दयानन्द संस्थान एवं जनज्ञान परिवार के अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर में यज्ञशाला के निर्माण, सत्संग भवन, कार्यालय आदि की व्यवस्था तथा जीर्णोद्धार हेतु अपने सामर्थ्यानुसार अधिक से अधिक सहयोग राशि, स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके ''स्वामी दयानन्द संस्थान'' के नाम चैक/ड्राफ्ट/ द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा.......यूनियन बैंक, दिल्ली-5, खाता नं. 307902010054434 **IFSC: UBIN** 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

२. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी।

वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गौ के लिए गो ग्रासरूप चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. परमात्मा की अमरवाणी बढ़िया पेपर पर छपा "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" लागत मूल्य ४०००/-रु.। अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में पहुंचायें। डाक से मंगाने पर ३५०/-रुपये अधिक लगेंगे।.....संस्थान द्वारा अब तक लगभग देश-विदेश में लगभग छह लाख से अधिक परिवारों में "चारों वेद का हिन्दी भाषा भाष्य" पहुंच चुका है।

४. विगत 54 वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक "जनज्ञान (मासिक पत्रिका)" के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। ५ वर्ष का शुल्क १२००/- रुपये है। इक्यावन सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा,

६. प्रतिमास "जनज्ञान" की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ २००/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा "जनज्ञान" मासिक में विज्ञापन देकर हमारे "राष्ट्र जागृति अभियान" में सहयोग प्रदान करें।

७. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची "जनज्ञान मासिक" में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

८. आपका सहयोग संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन, वेद एवं वैदिक साहित्य के प्रकाशन तथा सम्वर्धन में भी ठोस योगदान होगा।.....

अध्यक्ष-पण्डिता राकेश रानी
स्वामी दयानन्द संस्थान

पत्र व्यवहर में पते के साथ लिखी सदस्य संख्या / ई-मेल / मोबाईल / पिनकोड सदैव और अवश्य लिखें।

॥ ओ३म् ॥

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर **"चारों वेदों का हिन्दी भाष्य"** तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग साढ़े चार लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। "स्वामी दयानन्द संस्थान" ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग 30 वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान, दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि-प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर, संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर, गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। **यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन-रक्षण और संवर्धन में ठोस योगदान सिद्ध होगा।**

अतः गोभक्तों से निवेदन है कि गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में **अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा कम मूल्य में मिल रहा है बाद में दुगुने दाम पर लेना पड़ता है। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है।** गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** के नाम चैक/ड्राफ्ट/अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा **यूनियन बैंक, करोलबाग, नई दिल्ली-5, खाता नं. 307902010054434 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।**

बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को **'जनज्ञान'** मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)

पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-३६

चलभाषः +91-8459349349, +91-9810257254

E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

पत्र व्यवहर में पते के साथ लिखी सदस्य संख्या / ई-मेल / मोबाईल / पिनकोड सदैव और अवश्य लिखें।

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 4000 रु.
2. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी 300 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी 100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियां-पं. प्रेमचन्द जी 20 रु.
6. धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री 20 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 20 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 20 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा 300 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 20 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य 20 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह) 20 रु.
15. Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी 80 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी 300 रु.
17. History of the assassins 80 रु.
18. Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती 100 रु.
19. Vedic Prayer(दै.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ)60रु.
20. Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद)300 रु.
21. A Short Life Story of Swami Dayanand 40 रु.
22. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 20 रु.
23. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी 80 रु.
24. संक्षिप्त महाभारत 100 रु.
25. संक्षिप्त रामायण 20 रु.
26. ऋग्वेद शतकम 20 रु.
27. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
28. सत्संग पद्धति 15 रु.
29. वैदिक सान्ध्य गीत 20 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा 5 रु.
31. उपनिषद संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी 100 रु.
32. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार 300 रु.
33. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में) 150 रु.
34. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि 200 रु.
35. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि 100 रु.
36. वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार 100 रु.
37. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश 100 रु.
38. श्रीमद्भगवद्गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति 80 रु.
39. मोपला (उपन्यास)–वीर सावरकर 20 रु.
40. वीर सावरकर–संक्षिप्त जीवन परिचय 5 रु.
41. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 40 रु.
42. बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी 80 रु.
43. उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्यान)30 रु.
44. योगासन 20 रु.
45. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 3 रु.
46. विश्व को वेद का संदेश 3 रु.
47. विश्व को आर्यसमाज का संदेश 3 रु.

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी–वेदभिक्षुः 2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? –वेदभिक्षुः 2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं–सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? –राकेश रानी 2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ –जहीर नियाजी 2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 2.00 रु.
8. इस्लाम–एक परिचय 2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला – वेदभिक्षुः 2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर 5.00 रु.
15. Bible in the Balence 3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 2.00 रु.
20. A challange to the Christian Faith 1-00 रु.

मुख्य कार्यालयः स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254

T.T.
BAZAAR .com
Exclusive T.T Brand Shops Countrywide.
अच्छे लगे अच्छे दिखे
Shop online :
www.ttbazaar.com
Follow us on
You Tube
टी.टी. बाजार शोरुम खोलने के लिए सम्पर्क करें :- रुपक गांगुली (9953635108)
INNER WEAR | CASUAL WEAR | SPORTS WEAR | SHIRTS & TROUSERS - MEN, LADIES AND KIDS | HOME TEXTILES
T.T. Limited: Ph.: 011-45060708, 1800 1035 681 (Toll Free) | E.: newdelhi@ttlimited.co.in | W.: www.ttlimited.co.in
T.T. is a world famous globally well known Multi Product Brand selling in 65+ countries Since 1964 & Registered Trade Mark owned by T.T Industries, N. Delhi-5

जनज्ञान (मासिक)
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६

मार्गशीष-पौष
सम्वत्-२०७४
दिसम्बर, सन्-२०१७
प्रकाशन तिथि ३ दिसम्बर

Delhi Postal NO. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017
R.N.I. -10719/65
Posted at New Sabji Mandi
Date 5 & 6 of December-2017